हीरे--मोती

मामेकम् शरणम् व्रज

अर्जुन एक मात्र मेरी शरण में आ जा ।

(गीता-१८-६६)

संग्रह-कर्त्री

घर-घर गीता-प्रवचन कथा-सत्संग की धूम मचाने वाली, हर घड़ी हरिनामगुण ...पकाई परायणा, साधु-...का, आधुनिक मीरा, ...लक्ष्मी देवी गोगिया

मूल्य एक-रुपया मात्र ।

हीरे - मोती

—: मुद्रक तथा प्रकाशक :—
श्री गीता मुद्रणालय
कार्यालय—'गीता सन्देश' मासिक, गीता-आश्रम
पो० स्वर्गाश्रम, हृषीकेश, उ० प्र०
फोन नं० १२६

...र २००० प्रतियां

हीरे - मोती

—: मुद्रक तथा प्रकाशक :—

श्री गीता मुद्रणालय
कार्यालय—'गीता सन्देश' मासिक, गीता-आश्रम
पो० स्वर्गाश्रम, हृषीकेश, उ० प्र०
फोन नं० १२६

...र २००० प्रतियां

विषय सूची

॥ ॐ श्री सीतारामाय नमः ॥

नम्र-निवेदन—

कलियुग केवल नाम अधारा ।
सुमिरि सुमिरि नर उतरहिं पारा ॥

मोह-माया की गहरी निद्रा में सोया हुआ जीव कहीं अचानक जाग उठे, यह किसी पुण्य का फल है। और जागकर प्रभु-भजन का शौक हृदय को प्रेरित कर दे, यह तो बहुत ही पुण्यों का फल है। और कहीं भजन करने की लौ मन में जागृत हो जाये तो यह महान् पुण्यों और प्रभु की अपार कृपा का फल है।

धन्य हैं वे प्राणी जिनका मन इस नश्वर दुःखरूपी संसार से हटकर सच्चिदानन्द प्रभु के पावन नाम में प्रेम विभोर हो रहा है। सभी सन्तों, महर्षियों ने नाम की महिमा का बहुत ही गुणगान किया है। सन्त कबीर एक पद में कहते हैं—'मन लागो मेरो राम फकीरी में, जो सुख पाऊं नाम भजन में सो सुख नाहिं अमीरी में। भक्त रैदास को जब इस रस की अनुभूति हुई तो गा उठे—'अब कैसे छूटे नाम रट लागी।'

दीवानी मीरा के हृदय में जब प्यारे श्यामसुन्दर की लौ जाग उठी तो वह रुक न सकी। पांव में घुंघरू बांधे वह भागी जो कभी राजमहल की रानी कहलाती थी। लोक-लाज, रिश्ते-नाते तोड़ उन महलों से निकल पड़ी। हाथ में इकतारा लिए नयनों में प्यारे प्रीतम के दर्शन की प्यास लिए गली-गली में उन्मत्त हुई गाती फिरती थी "मेरी गैल न रोकियो कोई मैं अपने पिय के चली" और फिर उसने स्पष्ट शब्दों में कह दिया 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई" भगवन्नाम संकीर्तन के प्रभाव से उसका रोम-रोम अन्तर बाहर सभी पावन हो गया। वह इतनी पावन हो गई कि प्रभु ने उसे इस भौतिक शरीर सहित अपनी दिव्य ज्योति में समा लिया हमारे दिल में भी वही दर्द पैदा हो जिससे वह प्यारा हमसे मिलने के लिये मजबूर हो जाये।

नाम संकीर्तन से बढ़कर दुनियां में और कोई योग नहीं, जो मनको प्रभु के पावन चरणों से जोड़ सके। वह प्राणी धन्य है जो प्यारे की याद में तन्मय है। एक बार स्वयं अर्पण करके तो देखो, केवल बातों से काम नहीं चलेगा। बाहरी आडम्बर को छोड़कर अन्तर से उसका होना है। मनमानी करके संसार का रस तो ले

लिया, अब जरा प्रभु-नाम के रस का भी आनन्द लो। पता नहीं यह दुर्लभ मानव देह फिर प्राप्त हो या न हो।

यही वे भजन हैं जिनके स्वर और भाव मेरे रोम रोम में समाया हुआ है। जिनकी गहराई में मन डूबता ही जा रहा है। जीवन में यह लौ कहां से और कैसे लगी यह तो मैं स्वयं नहीं जानती। हां इतना अवश्य जान पाई हूं कि अन्दर से कोई बैजन्तो इस मन वीणा के तारों को झंकृत कर रही है, जिसकी स्वर लहरियां जब भाव सहित वाणी से बाहर आती हैं तो मैं मुग्ध हो जाती हूं। मुझे शौक सुनानें का नहीं अपितु सुनने का है। यह उन्हीं श्री सतगुरु १००८ स्वामी वेदव्यासानन्द जी महाराज का प्रसाद है। भाव भी उन्हीं का, स्वर भी उन्हीं का शब्द भी उन्हीं का है। यह पावन भजन रूपी हीरे-मोती का संग्रह रघुकुल शिरोमणि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के चरण-कमलों में नतमस्तक हो समर्पित कर रही हूं। प्रभु स्वीकार करें।

आशा है कि भक्तजन इस भजनावली को पढ़कर प्रभु भक्ति का लाभ उठायेंगे और अपना जीवन सफल बनायेंगे।

—लक्ष्मी गोगिया

* ॐ *

॥ श्री परमात्मने नमः ॥

* मंगलाचरण *

★

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा
भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभि,
र्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥१॥

ऋ० १, ८६, ८

अर्थ—यजन करने के योग्य हे देव ! हम अपने कानों से कल्याण सुनें, नेत्रों से कल्याण देखें, अपने स्थिर अङ्ग और दृढ़ शरीर से स्तवन करें। देवों ने हमारे हित के लिए जो आयु निर्माण की है उसको हम प्राप्त करें।

ॐ शनो मित्रः। शं वरुणः शंनोभवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो वृहस्पतिः। शं नो विष्णुरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे, नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु। तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

मित्र हमें सुखकर हो। वरुण हमें सुखकर हो अर्यमा हमें सुख कर हो। इन्द्र और बृहस्पति सुखकर हों। विशाल पराक्रम वाले विष्णु सुखकर हों। ब्रह्मको नमस्कार है। हे वायो! आपको नमस्कार। आप ही प्रत्यक्ष ब्रह्म हैं। मैं आपको ही प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूंगा। मैं ऋत सदाचारसे वचन कहूंगा। मैं सत्य सिद्धान्त कहूंगा। वह मेरा रक्षण करे- वह वक्ता का रक्षण करे। वह मेरा एवं वक्ता का रक्षण करे।

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्यान्तं न बिदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः॥

अर्थ—ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, रुद्र और वायु आदि देवता दिव्य स्तुतियों द्वारा जिनका स्तवन करते हैं। सामवेद का गान करनेवाले विद्वान अंग, पद, क्रम और उपनिषदों के सहित वेदों से जिनका यशोगान करते हैं। योगी लोग ध्यान में स्थिर किये हुए, तद्गत चित्त से जिनका साक्षात्कार करते हैं, देवता और असुर भी जिनका अन्त नहीं जानते, उन परमात्म देव श्री कृष्ण को नमस्कार है।

श्रीमती लक्ष्मी गोगिया जी की

❋ संक्षिप्त जीवनी ❋

★

इनका जन्म १९२६ में पंजाब के जिला डेरागाजी खां में हुआ। इनके पिता का नाम श्रीमान नोतन दास जी नागिया था। यह चार वर्ष की ही थीं कि इनकी माता स्वर्ग सिधार गईं। इनके पिता जो सन्त सेवक और दीन दुखियों की सेवा करने वाले और परोपकारी थे। उनका सारा जीवन परमार्थ में व्यतीत हुआ।

यही भाव लक्ष्मी जी के हृदय में भी उदधृत हुआ। इन्होंने पांच कक्षायें स्कूल में पढ़ी और पिता जी से आगे पढ़ने की कई बार इच्छा प्रगट की। पिता जी आशीर्वाद देते रहे। 'बेटा! तुम सच्ची पढ़ाई पढ़ जाओगी।' सन् १९६० में इनको सनातन धर्म मन्दिर ईस्ट पटेल नगर दिल्ली में श्री सतगुरुदेव स्वामी वेदव्यासानन्द जी के दर्शन हुए। गुरु जी की गीता अमृत वाणी का श्रवण पान कर इनका हृदय गदगद हुआ। श्री गुरुजी की अति कृपा से इनको गीता के सुनने एवं सुनाने का अभ्यास हो गया। गुरु जी का सन्देश है—

'गीता माता सारे विश्व के लिए है इसके सन्देश को जीवन में ढालने से जीवका कल्याण है।

पूज्य सद्गुरुदेव के गीता-ज्ञानोपदेश से एवं गीता-माता के स्वाध्याय से आपको सच्चे सुख एवं शान्ति की अद्भुत अनुभूति हुई और आपने अपने सम्पूर्ण जीवनको सदा के लिये गीतामाता के प्रचार एवं धर्म की सेवा में लगा दिया ।

लेखिका—स्वराज देवी मदान'

—:०:—



* गीता का सार *

* * * *

(१) क्यों निष्फल चिन्ता करते हो, क्यों व्यर्थ डरते हो, कौन तुम्हें मार सकता है, आत्मा किसी काल में न जन्मता है और न मरता है।

(२) जो हुआ वह अच्छा हुआ जो हो रहा है वह अच्छा हो रहा है, जो होगा वह अच्छा होगा। तुम भूत का शोक न करो, भविष्य का डर न करो, वर्तमान चल रहा है।

(३) तुम्हारा क्या गया जो तुम रोते हो, तुम क्या लाये हो जो खो दिया, तुमने क्या पैदा किया जो नाश हो गया, न तुम कुछ लाये, जो लिया यहीं से लिया, जो दिया यहीं पर दिया, जो लिया उस प्रभु से लिया, जो दिया उसी प्रभु को दिया, खाली हाथ आए, सो खाली हाथ चले, जो आज तुम्हारा है कल किसी और का था, आगे किसी और का

होगा, तुम इस को अपना समझकर प्रसन्न होते हो·····यही प्रसन्नता तुम्हारे दुःख का कारण है ।

(४) परिवर्तन संसार का नियम है·····जिसको तुम मृत्यु समझते हो यही जीवन है । एक मिनट में तुम करोड़ों के स्वामी होते हो तथा उसी क्षण में तुम दरिद्र बन जाते हो । मेरा-तेरा, अपना-पराया, छोटा-बड़ा सब मिटा दो, विचार से हटा दो । फिर सब तुम्हारा है और तुम सबके हो ।

(५) न यह शरीर तुम्हारा है न तुम इस शरीरके हो, यह आग, मिट्टी, पानी, वायु से बनता है । इसी में लीन हो जाता है फिर भी तुम्हारी आत्मा वैसी की वैसी स्थिर है फिर तुम क्या हो ?

(६) तुम अपने आपको उसके अर्पण करो यही सबसे उत्तम सहारा है । जो उसके सहारेको

जानता है। वह शोक, भय और चिन्ता से सर्वदा के लिए मुक्ति पा जाता है।

(७) जो कुछ भी करो है वह प्रभु के अर्पण करो। ऐसा करने से सदा जीवन मुक्ति का आनन्द, प्रेम अनुभव होगा तथा शरीर त्यागके बाद तत्क्षण ब्रह्म स्वरूपमें लीन होगा। प्रभुका प्यार ही जीवनका आनन्द है।



—: मानस रोग की औषधि :—

卐

आज दुनियां में हर एक को सुख की खोज है परन्तु वह सुख मिले कैसे यह विचार के योग्य है।

यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः ।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ॥

गी० ४–२२

अपने कर्म के अनुसार जो कुछ प्राप्त हो उसमें सन्तुष्ट रहने वाला, मान अपमान लाभ - हानि द्वन्दों से अतीत हुआ, राग द्वेष ईर्ष्या से रहित हुआ, कार्य में सिद्धि और असिद्धि में समत्त्व भाव वाला पुरुष कर्म को करता हुआ भी मुक्त रहता है और जन्म मृत्यु के चक्कर से छूट जाता है। क्योंकि समत्व भाव होने से दूसरे का सुख अथवा दुख अपने जैसा मानता है, भाई बन्धु को सुखी देखकर प्रसन्न रहता है सबका हित चाहता है और हित करता है।

सर्वं भूत हितेरताः ।

धैर्य सन्तोष नम्रता से जीवन व्यतीत करता है और हर क्षण उसका मन प्रभु स्मरण में लगा रहता

है, वह मनुष्य फिर गृहस्थ रूपी तालाब में कमल के फूल की तरह खिला रहता है। अथवा प्रसन्न रहता है।

अपने पुण्य और पाप किये हुए सुख-दुख रूप में आते हैं। प्रभु को दोष नहीं लगाना चाहिये। जो हो रहा है सो अच्छा हो रहा है। जो होगा सो अच्छा होगा जो हो गया है सो भी अच्छा हो गया है ऐसा निश्चय करने से शान्ति को प्राप्त होता है।

बिनु सत्संग विवेक न होई।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई॥

रामकी कृपा से सत्संग प्राप्त होता है और सत्संग से ज्ञान प्राप्त होता है। और सच्चे गुरु की शरण जाने से जीव का कल्याण होता है।

प्रभु की लीलाओं को श्रवण करने से तथा मनन करने से तथा निदिध्यासन करने से जीव लाभ प्राप्त करता है। कौन सा लाभ—जिस लक्ष्य के लिए, मानस जन्म लिया था प्रभु प्यार के लिए। उस प्यार में, कर्म करते हुए भी हर पल, हर घड़ी, हर क्षण डूबा रहता है। और अपना दुर्लभ मनुष्य जन्म सफल कर जाता है।

मनुष्य को संसारी चिन्ताओं को हटा कर जप करना चाहिये।

"श्री हरि शरणम् ।"

इस मन्त्र का भीतर ही भीतर जप करने से मन प्रभु में लग जाता है और महामन्त्र का कीर्तन करने से प्रभु से प्यार हो जाता है तथा प्रभु शरणागति हो जाता है ।

—: महामन्त्र :—

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

महापुरुषों की प्रेरक जीवनियाँ पढ़कर अपने जीवन को सफल बनावें

पूज्य सद्गुरुदेव श्री १००८ म०मं० श्री स्वामी

वेदव्यासानन्दजी महाराज सरस्वती

की

-: संक्षिप्त-जीवनी :-

●

१—जन्म—

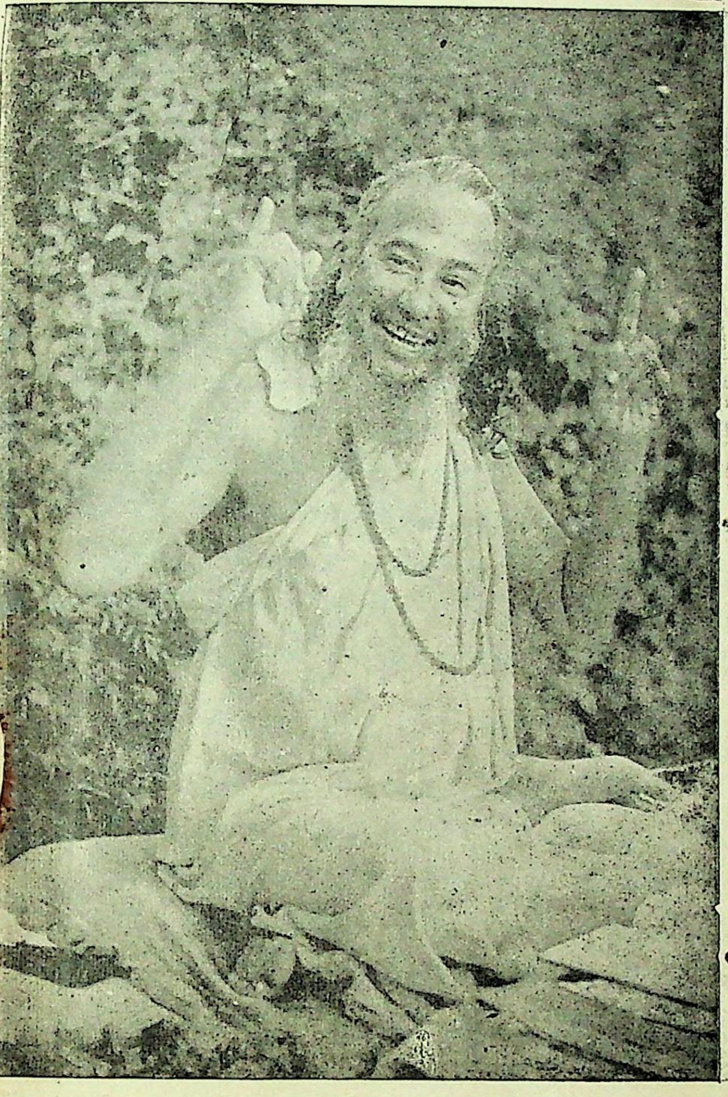
उत्तर प्रदेशके जिला फर्रुखाबादके मेरापुर नामक एक प्रसिद्ध ग्राम में एक उच्च ब्राह्मण कुल में आपका जन्म हुआ।

२—शिक्षा—

हिन्दी, संस्कृत, इंगलिश और उर्दू आदि कई भाषाओं की विशेष एवं पूर्ण योग्यता के साथ २ दर्शन इतिहास, धर्म एवं वेदान्तादि दार्शनिक विषयोंके सैकड़ों ग्रन्थों एवं गीता पर वर्षों विशेष रिसर्च एवं स्वाध्याय। आप आजन्म बाल ब्रह्मचारी हैं।

३—गृह त्याग—

१६ वर्ष की छोटी आयु में ही दसवीं कक्षा की परीक्षा देकर गृह-त्याग कर दिया। २४ वर्ष की आयु



पू० सद्गुरुदेव म०मं० श्रीस्वामी वेदव्यासानन्दजी सरस्वती

पर्यन्त स्थान २ पर कई कालेजों व विश्व-विद्यालयों में अध्ययन किया। तत्पश्चात् जंगलों एवं तीर्थों में कठिन तप, त्याग तथा साधना व स्वाध्यायमय जीवन व्यतीत किया।

४—साधना—

नैमिषारण्य तथा नरवर में अनेक वर्षों तक नंगे पैर व एक वस्त्र में रहकर नमक मीठा का त्याग करके गायत्री के २४-२४ लक्ष के पुरश्चरण किये। नरवर में कई दुग्ध कल्प, दधि-कल्प, तक्र कल्प तथा चान्द्रायण व्रत किये। रामायण के १०८ तथा गीता के १००८ पाठ एवं उपनिषद् व वेदमन्त्रोंके अनेक पाठ किये। हृषीकेश तीर्थ के निकट रामनगर में गंगा-तट पर वर्षों मौन व एकान्त रहकर अनेक प्रकार की योगादि साधनायें कीं। तथा राष्ट्रीय आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया।

५—दिनचर्या तथा रहन-सहन—

आप तपस्वी सन्त हैं। आप २४ घन्टे में एक बार भोजन करते एवं केवल चार घन्टे सोते हैं। शरीर रक्षा के लिये केवल एक गेरुआ वस्त्र और वह भी बिना सिला हुआ ही धारण करते हैं। आप पान, तम्बाकू, प्याज, लहसुन, चाय, काफी, मसाला तथा लालमिर्च आदि नहीं खाते। बिना चीनी तथा बिना नमक का दलिया आपका प्रिय भोजन है।

६–संस्थाओं की स्थापना–

उत्तरी भारत, तिब्बत तथा नेपाल आदि भिन्न २ देशों में वर्षों भ्रमण पर्यटन तथा सत्संग करते हुए स्थान-स्थान पर दर्जनों गीता-सत्संग, गीता-मन्दिर तथा गीता-विद्यालयों की स्थापना की, तथा कर रहे हैं। देश में अखिल-भारतीय ख्याति प्राप्त कई सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं प्रसिद्ध शिक्षा-संस्थानों के आप संरक्षक या संचालक हैं।

७–धार्मिक सम्मेलन एवं आन्दोलन–

वर्तमान काल में प्रति वर्ष स्थान-स्थान पर आप धार्मिक सम्मेलनों का आयोजन किया करते हैं। अमृतसर, यमुना नगर, हरिद्वार, इलाहाबाद तथा सूरत आदि नगरों में बीसों हजार जनता की उपस्थिति में बड़े-बड़े सम्मेलन कराये। अमृतसर-गीता महासम्मेलन में दो लाख की उपस्थिति थी। चीन-भारत युद्धके समय नेफा आदि भारत की पूर्वी सीमाओं पर एवं हिन्दी-विरोधी आन्दोलन के समय मद्रास, केरल आदि दक्षिण सीमाओं पर एवं पाकिस्तानी आक्रमण के समय अमृतसर पंजाब आदि पश्चिमी सीमाओं पर जाकर अपने ओजस्वी गीता-प्रवचनों द्वारा असंख्य जन-मानस का मनोबल ऊंचा करके देश-रक्षा एवं देश-सेवा के महान कार्य किये।

८—गीता आश्रम की स्थापना

इन दिनों हृषीकेश, लक्ष्मणझूला के पास गंगा की दूसरी ओर स्वर्गाश्रममें गंगा तट पर एक विशाल भूमि खण्ड में 'गीता - आश्रम' नामक एक विशाल आश्रम की आप रचना कर रहे हैं। धर्म प्रचारार्थ यह योजना लगभग एक करोड़ रुपये की चालू की गई है। इस रुपये से इस आश्रम में सनातन-धर्मका एक विशाल स्मारक खड़ा किया जायेगा। जिसमें—१. एक साधु विश्व-विद्यालय, (५०१ साधु)। २. गीता-गुरुकुल विद्यापीठ (५०१) ब्रह्मचारी। ३. एक विशाल गीता-मन्दिर ४. एक गीता-शिखर। ५. भिन्न - भिन्न देवताओं, ऋषि-मुनियों तथा भक्तों के १०८ आकर्षक मन्दिर। ६. एक विशाल सत्संग-भवन। ७. एक गीता गौशाला (१०१ गायें)। ८. गीता—मुद्रणालय। ९. गीता पुस्तकालय तथा वाचनालय एवं १०. एक रमणीक गीता—सरोवर आदि बनाये जायेंगे।

लगभग २०० नाली (६० बीघा) भूमि एक लाख रुपये में खरीदी जा चुकी है, जहां सत्संग प्रेमी-भक्त अतिथिजनों के लगभग ५०० कमरे बन रहे हैं। कमरे बनाने वालोंकी भीड़ लगी है गीता—गुरुकुल विद्यापीठ तथा मुद्रणालय स्थापित हो चुके हैं। मन्दिर बन रहे हैं। सत्संग चालू है। आप भी इस आश्रम में एक बार पधार कर दर्शन करें तथा सेवा का अवसर दें।



❋ प्रार्थना ❋

★

आई शरण में तुम्हारी भगवन ।
आई शरण में तुम्हारी राम ॥
नहीं योग न बल नहीं ज्ञान शक्ति ।
मैं तेरे करुणा की अधिकारी भगवन ॥
नहीं जप तप, नहीं भाव भगति ।
पर तेरे चरणों की पुजारी भगवन ॥
नहीं विद्या गुण नहीं गत्य मेरे ।
तेरी दया की भिखारी हूँ भगवन ॥
"लक्ष्मी" प्रभु तेरे चरणों में आई ।
मांगें भगति यह तुम्हारी भगवन ॥
आई शरण में तुम्हारी भगवन ॥

श्री गणेश-वन्दना

गणेश मनाओ जी रलमिल सारे
भक्त प्यारे मंगल गाओ जी
जेड़ा आद गनेश मनावे मंगयां मुरादां पावे
सीस झुकाओ जी – रलमिल सारे
ओ पार्वती दा जाया शंकर दा राजदुलारा
ओह्दी महिमा कोइ ना जाने ओह्दा भेद किसे ना पाया
सीस झुकाओ जी – रलमिल सारे
जेड़ा ओट लेवे ओह्दे दर दी, ओह्दी दुनियां पानी भरदी
छड झगड़े केड़े जग दे आ जान्दे तेरे दर दे
ओ सब कुछ पांदे जी, रलमिल सारे…॥

श्री कृष्ण-वन्दना

वसुदेव सुतं देवं कंस चाणूर मर्दनम् ।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥
नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मण हिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

श्री हनुमान-वन्दना

हनुमत हनुमत मैं पुकारूं, हर बशर के सामने।
मन तो मेरा हर लिया हनुमत के स्वामी राम ने ॥
समुद्र को तुम लांघ गये पवन रूप धार के।
सीता जी को शान्ति दी निश्चर दल के सामने ॥
राम ने जब तुम्हें पुकारा, प्रेम से तब धाये हो।
अहिरावण को नष्ट कीन्हा मकरध्वज के सामने ॥
हनुमत हनुमत मैं पुकारूं···।

श्री राम-वन्दना

आपदामप हर्तारं दातारं सर्व सम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥
राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥

श्री गुरु-वन्दना

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

जगत में गुरू प्रेम अवतार

★

जगतमें गुरू प्रेम अवतार सखी री मेरे गुरू ज्ञान अवतार
अवगुण हारी मैं भटक रही थी,भव-बंधनमें अटक रही थी
गुरुदेव ने लीनो उबार ।। जगत में···
गुरु विन ज्योती कौन दिखावे,मन अंधियारा कौन मिटावे
गुरु ज्ञानदीप दे बार ।। जगत में···
सत व्यापार गुरू जी करते, प्रेम ज्ञान की तुला पकड़ते
मेरी खुदी के बटड़े डार ।। जगत में···
अमृत फल को हाथ में दीना दिल मेरा गिरवीं धर लीना
मेरा जन्म दिया है सुधार ।। जगत में···
अमृत बूंद सतगुरु से पाई जन्म-जन्म की प्यास बुझाई
अब छाया है प्रेम खुमार ।। जगत में···
गुरु चरणन की धूली पाई, नाम रतन की पूँजी पाई
मेरे गले नाम का हार ।। जगत में···
चरण कमल में सीस नवाऊँ दोष भूल अपनी बस पाऊँ
गुरु चरणों में नमस्कार ।। जगत में···

रामायण की चौपाइयाँ

卐

❖ भक्त (साधक) के लक्षण ❖

जिनके श्रवण समुद्र समाना ।
कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना ॥
भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे ।
तिनके हृदय सदन तव रूरे ।
लोचन चातक जिन्ह करि राखे ।
लहहिं दरस जलधर अभिलाखे ॥
तुम्हहिं निवेदित भोजन करहीं ।
प्रभु प्रसाद पट भूषण धरहीं ॥
शीस नवहिं सुर गुरु द्विज देखी ।
प्रीति सहित करि विनय विशेखी ॥
कर नित करहिं राम पद पूजा ।
राम भरोस हृदय नहिं दूजा ॥
चरण राम तीरथ चलि जाहीं ।
राम बसहु तिनके मन माहीं ॥
काम क्रोध भय मान न मोहा ।
लोभ न क्षोभ न राग न द्रोहा ॥

जिनके कपट दम्भ नहिं माया ।
तिनके हृदय बसहु रघुराया ॥
सरल स्वभाव न मन कुटिलाई ।
यथा लाभ सन्तोष सदाई ॥

दुष्ट के लक्षण

जिन हरि कथा सुनी नहिं काना ।
श्रवण रन्ध्र अहि भवन समाना ॥
नयनन सन्त दरस नहिं देखा ।
लोचन मोर पंख करि लेखा ॥
ते शिर कटु तुम्बरि सम तूला ।
जे न नमत हरि गुरु पद मूला ॥
जिन्ह हरि भक्ति हृदय नहिं आनी ।
जीवत शव समान ते प्रानी ॥
जो नहिं करइ राम गुन गाना ।
जीह सो दादुर जीह समाना ॥
कुलिश कठोर निठुर सोइ छाती ।
जो हरि चरित सुनि न हरषाती ॥

* वन्दना *

चरण-कमल बन्दौं हरिराई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कछु दरसाई॥
बहिरो सुनै मूक पुनि बोलै, रंक चले सिर छत्र धराई।
'सूरदास' स्वामी करुणामय, बार-बार बन्दौं सिर नाई॥

—: महा-मंत्र :—

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

सब वेदों का सार यही है।
योग यज्ञ जप ध्यान यही है॥
सन्तों का उपदेश यही है।
जीवन का उद्देश्य यही है॥ हरे०॥
भक्तों का धन धाम यही है।
सुख सम्पति विश्राम यही है॥ हरे०॥
सर्व सुखों की जड़ी यही है।
संजीवनि सुख भरी यही है॥ हरे०॥
शंकर का आधार यही है।

नारद का झंकार यही है ॥ हरे० ॥
सब विद्या का सार यही है।
सर्व शास्त्र परचार यही है ॥ हरे० ॥
सब साधन का अर्थ यही है।
सबका परम पुरुषार्थ यही है ॥ हरे० ॥
निर्धन का धन प्राण यही है।
निर्बल का बल मान यही है ॥ हरे० ॥
गोपियों का सद्पन्थ यही है।
प्रेमियों का सद्ग्रन्थ यही है ॥ हरे० ॥
कर्म और सतधर्म यही है।
सद्ग्रन्थों का मर्म यही है ॥ हरे० ॥
भागवत का व्याख्यान यही है।
गीता का सद्ज्ञान यही है ॥ हरे० ॥
मोक्ष धर्म और भक्ति यही है।
'लक्ष्मी' का कृष्ण राम यही है ॥ हरे० ॥

—★—

जापै चढ़ै नाम रस रंग।
सदा फिरै अलमस्त दिवानो डुब्यो प्रेम रस गंग ॥

गावै नाचै रोवै हंसै पुनि मतवारन के ढंग।
हरि को नाम सकल अघ नाशक हरत विषय जग संग ॥
धन्य गुरू जिन गीता, नाम सुनायो कीन्हीं कृपा अभङ्ग।
'लक्ष्मीदासी' हरिनाम प्रेमप्रद करुणानिधि रघुनन्द ॥

* गीता-ज्ञान *

गीता-ज्ञान सिखा दो फिर से, भारत को भगवान।
ध्रुव प्रह्लाद भरत से बालक, होयँ यहाँ गुणवान ॥
ब्रह्मचर्य तप तेज पुंज हों, वैदिक वीर महान।
धीर वीर गम्भीर सभी हों अर्जुन भीम समान ॥
पतिव्रता हों नारि यहाँ की, सत्य शील द्युतिमान।
सीता सावित्री अनुसुइया सी, हों निष्ठावान ॥
व्यास वशिष्ठ कपिल से ज्ञानी, होयँ महा विज्ञान।
वेद ज्ञान का हो प्रकाश फिर, मिटे मोह अज्ञान ॥
घर-घर में सब पढ़ें सुनें नित, गीता गौरव ज्ञान।
अर्थ धर्म और काम मोक्ष का जिसमें है विज्ञान ॥
गौरक्षा निज देश धर्म हित, करें समर्पित प्राण।
सब मिल तन मन धन से, करें देश उत्थान ॥
देश धर्म की रक्षा में हो, हम सबका बलिदान।
ब्रह्म उच्च पद पावै भारत, करो कृपा भगवान ॥

भजन

माया विच रंग्यो तू, राम क्यों न बोलदा,
खान पीन सोन विच उमर गुजारी है,
इक पल वैठ के न जपया मुरारी है,
हीरा जन्म पाके बन्दा मिट्टी विच रोलदा।
माया विच रंग्यो···॥
ऐवें कों मान इस रूप जवानी दा,
विषयां दे विच पिया जिंदगी नूँ रोलदा,
दुनियां दे धंधे विच होंदियां खुआरियां,
माया विच रंग्यो···॥
पेडां तेरा दूर ओथे मंज्जलां ने भारियाँ,
हंस चुगन मोती काग कूड़ा पेया फोलदा,
माया विच रंग्यो···॥

...

अज मथुरा दे विच अवतार हो गया शाम निका जेया
सुन-२ के ते सुखी संसार हो गया शाम निका जेया
जदों देवकी ने हृदय नाल ला लिया
शाम ला लिया, वसुदेव ने टोकरे में पा लिया
शाम पा लिया; छड़ मथुरा नूं गोकुल नूं
तैयार हो गया — शाम निका जेया
अज मथुरा दे विच अवतार हो गया......॥
शाम जेलां विचों चोरी-चोरी चलया हां चलया
किथे जमया ते किथे जा पलया हां पलया
एह यशोदा दे वेड़े दा श्रृङ्गार हो गया शाम निका जेया
अज मथुरा दे विच अवतार हो गया...॥
अज मथुरा दे लोक खुश होवंदे हां होवंदे
कंस अपने नसीबां नूं रोवँदे हाँ रोवंदे
कंस अपनी ही जान तों बेजार हो गया शाम निका जेया
अज मथुरा दे विच अवतार हो गया...॥
जदों पूतना सी दूध पिलांवदी हां पिलाँवदी
पई अपने ही मन नूँ ललचांवदी हाँ ललचांवदी
प्राण कड़ ते ओ छाती ते सवार हो गया शाम सचीमुची
अज मथुरा दे विच अवतार हो गया शाम सची मुची ॥

दरश करा दे यशोदा अपने बाल दा,
रक्षा लई भक्तां दे कई रूप धारदा।
मैं दूरों चलके आया दो नैन पियासे लाया,
जल्दी भिक्षा पा दे अर्ज गुजारदा। रक्षा...।
अन्दरों यशोदा आई रूप देख घबराई,
सिर ते वैठा नाग फूकां मारदा। रक्षा...।
डरके यशोदा बोली ले भिक्षा कर झोली,
हीरे रत्न अनमोली न होर बोली बोली,
अन्दर बैठा बाल चीकाँ मारदा। रक्षा...।
ओनूं बाहर लै आ विच झोलो मेरी पा,
गले नाल लवां मैंला मैंनूं आवे सुख दा।
रज-रज दर्शन पावाँमैं किशनगोपाल दा। रक्षा...।
तूं जटाजूट वाला सर्पां दी गल विच माला,
तेरे तनपे है मृगछाला हथ विच त्रिशूल भाला,
मेरा बाल आयाना हींकें मार दा। रक्षा...।
नई बाल आया ना ए इक मेरा मित्र पुराना,
जल्दी दर्शं करा दो मेरे लाल दा। रक्षा...।

बाहर जो बाल लै आये मित्र देख मुस्कराये,
शंकर जी हर्षाए रज-रज के दर्शन पाये,
धन-धन बोले शब्द जय जयकार दा,
रक्षा लई भक्तां दे कई-२ रूप धारदा ॥

अयोध्या में लेके अवतार आज मेरा राम आ गया,
पृथ्वी का हरने को भार आज मेरा राम आ गया,
अवध पुरी में आज आनन्द छाया,
कौशल्या ने राम सा पुत्र जाया,
हर्षित हैं सब नर ना आज मेरा राम आ गया।
अयोध्या में लेके अवतार···।
दशरथ की किस्मत का चमका सितारा,
घर-घर आज आया है भक्तों का सहारा,
हो रही है जय जयकार आज मेरा राम आ गया।
मीठी बोली से कोयल आज बोलें,
मोर वन में करे हैं किलोलें,
फूलों की छाई है बहार आज मेरा राम आ गया।

कैसी सुहानी घड़ी आज आई,
हंस कर देते हैं सबको बधाई,
करनेको भक्तोंसे प्यार, आज राम मेरा आ गया ।।

मुझे है काम सतगुरु से जगत रूठे तो रूठन दो,
कुटुम्ब परिवार सुत दारा माल धन लाज लोकन की,
हरि के भजन करने में यदि छूटे तो छूटन दो ।
मुझे है काम सतगुरु से······।।
बैठ संतन की संगत में करूं कल्याण मैं अपना,
लोक जग के भरोसे में मौज लूटे तो लूटन दो ।
मुझे है काम सतगुरु से······।।
प्रभू का ध्यान करने की लगी दिल में लगन मेरे,
प्रीत संसार विषयों से अगर टूटे तो टूटन दो ।
मुझे है काम सतगुरु से······।।
धरी सिर पाप की मटकी मेरे गुरुदेव ने झटकी,
तो ब्रह्मानन्द ने पटको अगर फूटे तो फूटन दो ।
मुझे है काम सतगुरु से······।।

—※—

जब से मिले सतगुरु मुझे, जग उठी तकदीर मेरी।
दिल मेरे पे नाम तेरा, होंठों पे पैगाम तेरा।
बदल गई तकदीर मेरी, जग उठी तकदीर मेरी॥
तू मेरे मन दा मालिक है, सारी दुनियां दा पालक है।
कहती है जागीर मेरी, बदल गई तकदीर मेरी॥
जबसे मिले मेरे सतगुरुजी, जग उठी तकदीर मेरी॥

★

सतगुरु मिले मेरे सारे दुख बिसरे,
अन्तर के पट खुल गये री,
ज्ञान की आग जली घर भीतर,
कोटि कर्म सब जल गये री। सतगुरु मिले…।
पांच चोर लूटें थे रात दिन,
आप ते आप ही टल गये री। सतगुरु मिले…।
बिन दीपक म्हारे भया उजाला,
तिमिर कहाँ जाने नस गये री। सतगुरु मिले…।
त्रिवेणी सी म्हारे धार बहुत है,
अष्ट कमल दल खिल गये री। सतगुरु मिले…।
कोटि भानु म्हारे भया प्रकाशा,
औरहिं रंग बदल गये री। सतगुरु मिले…।

अड़सठ तीरथ हैं घर भीतर,
आपस में रल मिल गये री। सतगुरु मिले···।
गगन मण्डल में वर्षा हुई,
कमल के कुण्ड उभूल गये री। सतगुरु मिले···।
कहे 'कबीर' सुनो भाइ साधो,
नूर में नूर जो मिल गये री। सतगुरु मिले···।

—★—

आजा आजा वे श्याम मुरारी, कि फुल वांगू जिन्द बारा,
रो रो के मैं कमली होई, श्याम विना मेरा होर न कोई,
दस किन्नूं मैं हाल सुनावां, कि फुल वांगू जिन्द बारा।
श्याम आवे ते मैं सदके जावां, मोरा वांग पहलां पावा।
तेरे राह विच नयन बिछावां, कि फुल वांगू जिन्द बारा॥
दरशन तेरे नूं अखियां तरसन, सावन वगे छमछम बरसन।
मैंनूं तेरे दर से दिया चाहना, कि फुल वांगू जिन्द बारा॥
इक वारी आके मुखड़ा दिखा जा जीवन नैया पार लगा जा
मैं दर दर ठोकर खावां कि फुल वांगा जिन्द बारा॥
आंजा आजा वे श्याम मुरारी।
कि फुल वांगा जिन्द बारा॥

तेरा राम जी करेंगे बेड़ा पार उदासी मन काहे को करे,
नैया तेरी राम हवाले, लहर लहर हरि आप संभाले।
हरि आप ही उठावे तेरा भार। उदासी मन···॥

काबू में मझधार उन्हीं के, हाथों में पतवार उन्हीं के।
तेरी हार भी नहीं है हार। उदासी मन···॥

सहज किनारा मिल जायेगा परम सहारा मिल जायेगा।
डोरी सौंप तो तें इक बार। उदासी मन···॥

तू निर्दोष तुझे डर किसका, पग-पग पर साथी ईश्वर है।
जरा भाव से करो पुकार। उदासी मन···॥

उदासी मन काहे को करे, काहे को करे, काहे को करे।
तेरा राम जी करेंगे बेड़ा पार, उदासी मन काहे को करे॥

कैसी मुरली बजाई श्याम ने,
मेरी सुध बिसराई श्याम ने।

सुन सुन मुरली को जिया लहराये,
डोलें उमंग दिल से रहा नहीं जाये।
ऐसी धूम मचाई श्याम ने, ॥ मेरी सुध० ॥

पड़ी धुनक मुरली की कानन में,
नींद नहीं अब मोरे नयनन में,
मेरी निंदिया चुराई श्याम ने। मेरी सुध०।
औगुन हारी श्यामा पार लगाई,
पड़ी मझधार किनारे लगाई,
मेरी किश्ती किनारे लाई श्यामने। मेरी सुध०।

—*—

तेरे द्वार खड़े युग बीत गये,
बोलो बोलो प्रभू जी कब आओगे।
घट घट में तुम्हें हम खोज चुके,
कण कण में तेरा हम बोध लिये,
अब मन की यही प्रतीति लिये,
बोलो बोलो प्रभू जी कब आओगे। तेरे द्वार०।
गङ्गाधर शिव भोला स्वामी,
कैलाश पति शिव अन्तर्यामी,
तेरे चरणों में हम जीत गये,
बोलो बोलो प्रभू जी कब आओगे। तेरे द्वार०।

माया का पर्दा खूब किया,
मेरे मन का परदा खींच लिया,
राह देख मैं आशा दीप लिए,
बोलो बोलो प्रभू जी कब आओगे। तेरे द्वार०।

कभी विनती हमारी सुनोगे सही,
दासी को मुरारी मिलोगे सही,
हम हार गये तुम जीत गये,
बोलो बोलो प्रभू जी कब आओगे। तेरे द्वार०।

निर्लेप के नाथ हृदय में बसो,
मम प्राणों के साथ समाधि रचो,
सब स्वार्थ के जग में मीत भये,
बोलो बोलो प्रभू जी कब आओगे। तेरे द्वार०।

प्रभु जी तुम दीपक हम बाती,
जाकी ज्योति जले दिन राती।
अब कैसे छूटे नाम रट लागी॥
प्रभु जी तुम मोती हम धागा,

जैसे सोने में मिलत सुहागा।
अब कैसे छूटे नाम रट लागी ॥
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा,
ऐसी भक्ति करे रैदासा।
अब कैसे छूटे नाम रट लागी ॥

प्रभु (हरि) दे ध्यान विच लइयां क्यों न अखियाँ।
रज रज वेख के रजाइयां क्यों न अखियां ॥
इन्हां अंखा विच जैसी मैल अज्ञान दी,
निगाह तेरी वन्दे चूजे रब न पहचान दी।
किसे अंखा वाले नूं विखाइयां क्यों अखियां ॥ प्रभु०
घाटा पै जावे ते मकान वागन, कोई चला जावे ते…
ओदी याद विच ए, बरसाइयां क्यों न अखियां। प्रभु०
इन्हा विच प्यार दा जे अघरु न आया,
इन्हा नयना विच जे गोविन्द न बसाया कदी।
सूरदास वांगन ए कडाइयां क्यों न अखियां,
प्रभु दे ध्यान विच रजाइयां क्यों न अखियां ॥
पुन्य तेरे इक वी नहीं पाप बेशुमार ने,
तेरियाँ दो अखां ओदे नेत्र हजार ने।
पाप करन वेले शरमाइयां क्यों न अखियां,
रज रज वेख के रजाइयां क्यों न अखियां ॥

राम नाम की बूटी मैं तां पीनी ए जय हो मैं तां पानी ए
राम नाम है ऐसा नीका बाहरों अन्दरों है यह मीठो,
न कर अाड़ियां मैं तां पीनी ए, जय हो मैं तां पीनी ए ॥

ए बूटी मीरा ने पीती ओ दी हो गई श्याम नाल प्रीती,
मैं वी अज तां ओहो बूटी पीनी ए, जय हो मैं तां…॥

वसदा रहे जहान तेरा, उजड़ जाये जग सारा,
लोकां ताई रोज पिलांदा मैंनू देदां लारा, वे मैं तां…॥

ए बूटी नरसी ने पीती, ओ दी हो गई श्याम नाल प्रीती,
ओ हो बूटी मैं तां पीनी ए, जय हो मैं तां पीनी ए ॥

❀❀

अब कैसे छूटे नाम रट लागी
राम रट लागी गोपाल रट लागी।

प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी, जाकी अङ्ग-२ वास समानी,
अब कैसे छूटे नाम रट लागी, राम रट लागी गोपाल…।
प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा,
जैसे चितवत चन्द्र चकोरा।
अब कैसे छूटे नाम रट लागी, राम रट लागी गोपाल…।

—❀—

दिल दुनियां नजारे देख भुल गया ए सुनो शाम जी,
तेरे नाम दी कदर न जानी न जानी,
झूठी दुनियां ते हो गई दिवानी हां दिवानी,
जन्म विषयां विकारां विच भुल गया ए…।

सच्ची भक्ती दा रस्ता दिखावो हां दिखावो,
भव सागर पार लगाओ हां लगाओ,
मोह माया विच सारा जग भुल गया ए···।
दाता मेहर दी नजर निहारो हां निहारो,
दुखी दुनियां तों दिल मेरा डुल गया ए,
सुनो अर्ज गुरुदेव हमारी,
हुन भक्ति दा दिल अन्दर गुल पिया रे ॥ दिल··· ॥

❀❀❀

सखियों मत पकड़ो मेरी बइयां मोरी दुखैं नर्म कलैयां,
मैं नहिं तेरा माखन खायो अपने घर के धोखे आयो।
मटकी पर नहिं हाथ लगायो छोड़ दे मेरी बइयां,
सखियों मत पकड़ो० ॥

खोल किवरियाँ भरन गई पानी भूल गई अब क्यों पछितानी,
मो संग कर रही खींचातानी, अरी झूठा दोष लगावे मोको,
तेरे घर में घुसीं बिलैंयाँ, सखियों मत पकड़ो मेरी बइयां ॥
आज छोड़ दे सौगंध खाऊँ फिर ना तेरे घर में आऊँ,
नित तेरी गागर उठाए, बाट देखते गोप सखा सब,
दूर निकरि गई गउआँ, सखियों मत पकड़ो मेरी बइयां ॥
तोकूं नेक लाज ना आवे मों सूधे को दोष लगावे,
घर बुलाइ के चोर बनावे, वेग छोड़ दे देर हो गई,
देख रहा बल भैया, सखियों मत पकड़ो मेरी बइयाँ ॥

चलो चल दर्शन करिये वंसरि वाले आये ने,
धर्म दे बेड़े बन लाके पापी पार झुकाये ने।
पिता जिन्हां दा वसूदेव है माता देवकी जाए ने,
मथुरा दे विच जनम लिया है गोकुल डेरे लाए ने,
यमुनाजल ठाठा मारे शाम ने चरण झुकाए ने,
चलो बहनों चल दर्शन करिये बंसरिवाले आये ने ॥
मोरमुकुट माथे तिलक विराजे कुण्डल शोभा पाएने,
हथ वंशी श्याम ओढ़े कमली बन-२ गउआं चराए ने
वृन्दावन विच रास रचाके सखियां नूं मस्त बनाये ने
ऋषि मुनियां दे दुखड़े काटके चारों युग बनाए ने।
चलो बहनों चल दर्शन करिये बंसरि वाले आये ने ॥

—※—

मीरा पुकार रही आज आओ मेरे गिरधर गोपाल,
मोर मुकुट माथे तिलक विराजे
गले वैजन्ती माला साजे।
देख-२ हो जाऊँ निहाल, आओ मेरे गिरधर…॥
भोर भई मोहन वनको जावे,
ग्वालबाल संग गउएँ चरावे।
कन्धे में कमली डाल, आओ मेरे गिरधर…॥

माता यशोदा जब पास बुलावे,
बइयां पसारें मोहन गोद में आवे ।
ठुमक ठुमक चले चाल, आओ मेरे गिरधर···॥
मीरा को प्रभु दर्श दिखाओ,
जन्म जन्म की प्यास बुझाओ ।
कट जाए माया का जाल, आओ मेरे गिरधर···॥

❀❀❀

निका जया शाम मेरा मटकियां फोड़ गया,
चढ़ा छिके ते नी हाथ मक्खन रोड़ गया ।
जद पानी भरन नूं जावां दस की मैं हाल सुनावां,
रस्ते विच पकड़ खलोता मैं ठाडी पई शर्मावां । कि मट०
तूं सुन यशोदा मैया तेरा काला कृष्ण कन्हैया,
सखियां नूं रोज सतावे तेरा बांका नाथ नथैया ।
कि बहियां मरोड़ गया । चढ़ छिक्के···॥
ऐ सुन यशोदा माई झट कृष्ण नूं पकड़ ले आई,
गुस्से विच आके ओने मोहन ते सोटा चाई कि हथ वी–
जोड़ रहा । चढ़ छिक्के···॥

–❀–

मेरे ! मन हरि चरणां दे नाल प्यार कर,
राम नाल प्यार पाके जनम सुधार कर ।

दुनियां ते झंझटां तों की तैनू लभना,
धोखे वाली बाजी है दुनियां तैनूं ठगना।
फंस धोखे विच ना आपनूँ रखवार कर। मेरे मन०।
विषयां विकारा तेरी मत काह नूं मारी ए,
याद ओस प्यारे दी दिल तों विसारी ए।
होश ते सम्भाल मना कुछ तां विचार कर। मेरे मन०।
राम बिन कौन है जग विच अपना,
होर दी ना आस रख सब जग सपना।
राम विन मित्र नइयों कोई ऐतवार कर। मेरे मन०।
राम सदा हथ देके तैनूं बचांवदा,
काल दे जाल विचों जीव नूं छुटांवदा।
ऐसे रामनाम उत्तों आपनूं बलिहार कर। मेरे मन०।

—०—

तेरी शरण में जो गया भव से उसे छुड़ा दिया;
चाहे वो जैसा पातकी पावन उसे बना दिया।
दर दर भटकता है वही तेरी शरण जो गया नहीं,
भूल से अगर गया नहीं रास्ता उसे बता दिया॥
जिस की लगन हो आपसे छूटे जग के पाप से,
छूटे है तीनों ताप से शीतल उसे बना दिया।
तेरी शरण में जो……॥

भाग प्रबल उसी का है, जीवन सफल उसी का है,
त्याग सफल उसी का है जिसको तूने अपना लिया ।
तेरी शरण में जो……॥
तुम तो अनाथों के नाथ हो, भक्त जनों के साथ हो,
मुझ से अधम अति नीच को दाता तूने अपना लिया ।
तेरी शरण में जो……॥
जिसको भरोसा हो गया, बेड़ा भी पार हो गया,
अलमस्त ही वो हो गया, प्याला जिसे पिला दिया ।
तेरी शरण में जो……॥

★

बृज के नन्द लाला राधा जी के सांवरिया,
सब दुख दूर हुए जब तेरा नाम लिया ।
जब तेरे गोकुल में आया दुःख भारी,
एक इशारे से सब विपदा हारी ।
ढल गया गोवर्धन जिसे तूने मोड़ लिया । सब…।
मीरा पुकारी जब गिरधर गोपाला,
बन गया अमृत विष भरा प्याला ।
कौन मिटाए उसे जिसे तूने राख लिया । सब…।

नैनों में शाम बसे, मन में बनवारी,
सुध सुन भूल गई मुरली की धुन प्यारी।
मन के मधुवन में रास रचाए रसिया। सब···।

卐

मेरी झोपड़ी दे अज भाग खुल जानगे, राम आनगे,
मेरे खट्टे मिठ्ठे बेर प्रेम नाल खानगे, राम आनगे।
आयी बना विच राम ए सुनके हाँ सुनके,
नी में रखे खट्टे मिठ्ठे बेर चुन चुनके।
मेरी श्रद्धा नूं वेख राम भोग लानगे, राम आनगे।
ओहना ऊँच नीच जात नहिं देखनी,
चंगी बुरी वी सौगात नहीं देखनी।
दयावान मैंनूं चरणां दे नाल लानगे, राम आनगे।
मैंनूं पूजा पाठ दा बल नहीं, बल नहीं,
मेरे विच गुणां वाली कोई गल नहीं।
फिर किस तरह ओ बेड़ा पार लानगे, राम आनगे।
मैंनूं कोई भी नहीं पता नित नेम दा,
ऐना सारे बेराँ विच रस मेरे प्रेम दा।
जिनूं खादिया ही प्रभु मेरे रज जानगे, राम आनगे।

मैंनूं नीच नूं जे प्रभु अपना लिया,
मेरे खट्टे मिठ्ठे बेरां नूं जे खा लिया।
फिर दासी दे सब अवगुण भूल जानगे, राम आनगे।

—००—

मैंनुं न करो चरणां तों दूर प्रभु मेरे कर दो माफ कसूर,
मैंनूं ला लवी चरणा जरूर प्रभु जी मेरे कर दो० ।
माता पिता बन्धु सुत भाई प्रभु तेरे बिन कोई न सहाई,
ला लवीं चरणा जरूर प्रभु जी मेरे कर दो माफ कसूर ।
जे मैं इस दुनियां विच आई पाप करन तों मैं न शरमाई,
कीते ने पाप जरूर प्रभु जी मेरे कर दो माफ कसूर ।
विषयां विकारां दे धंधयां विच फंस के,
दुनियां दारी दे धंधया विच फंस के,
मैं हो गई हाँ चकनाचूर प्रभु जी मेरे कर दो माफ कसूर ।
ज्ञान ध्यान दी ज्योत जगाओ भुलिया होइया नूं रस्ते पाओ,
मैंनूं ला लवीं चरणा जरूर प्रभु मेरे कर दो माफ कसूर ॥

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो,
मन को विषयों से हरदम हटाते चलो।

देखना इन्द्रियों के न घोड़े भगें,
रात दिन इनको संयम के कोड़े लगें।
अपने रथ को सुमार्ग चलाते चलो ॥ कृष्ण० ॥

दुख में तड़पो नहीं सुख में भूलो नहीं,
प्राण जाये मगर नाम भूलो नहीं।
राम धन का खजाना बढ़ाते चलो ॥ कृष्ण० ॥

नाम जपते चलो काम करते चलो,
पाप की वासना को हटाते चलो।
प्रेम भक्ती के आंसू बहाते चलो ॥ कृष्ण० ॥

ख्याल आयेगा उनको कभी न कभी,
भक्त पायेगा उनको कभी न कभी।
ऐसा विश्वास मन में जगाते चलो ॥ कृष्ण० ॥

—**—

इक अपनी लगन लगा मोहना,
दर दर न सानूं रुला मोहना।
रख ले नौकर अपने दर दा,
चरणा दी सेवा करा मोहना ॥

ए तां दुनियां आनी जानी ए,
ऐदे नाल की प्रीत लगानी ए ।
सब आल जाल मिटा मेरे,
भक्ति दा जाम पिला मोहना ॥
सब दुनियां मैं आजमा बैठी,
दिल अपना मैं तेरे नाल ला बैठी ।
सब आल जंजाल मिटा मेरे,
भक्ति दा जाम पिला मोहना ॥ इक अपनी० ॥
मैं तां पापी औगुन हारी हां,
तेरे नाम तों सदके वारी हां ।
हुन इस नूं तोड़ निभा मोहना,
दर दर न सानूं रुला मोहना ॥ इक अपनी० ॥

—o—

पार जमना दे हारां वाले दा डेरा,
सानूं वी ले चल नाल अड़या वे ।
जे टुर चलयो मैं जान न देसां,
गल विच पलड़ा पा अर्जां करेसां ॥ सानू वी० ॥
सावन ने हुन झड़ियां लाइयां,
सब सखियां रल पींगा पाइयां ।

झूठ आके साडे नाल अड़या वे ॥ सानूं वी० ॥
कुब्जा ने तेनूं जाइ पाया, असां ने रो रो हाल बजाया।
वेख के साडा हाल अड़या वे, सानूं वी ले चल नाल० ॥
दिने वी रोवां राती वी रोवां, रो रो हजुआं हार परोवां।
झूठे ने कोल करोल अड़या वे, सानूं वी ले चल नाल० ॥
तेरी दासी अरज गुजारे, आ मिल मैंनूं बंसरि वाले।
रख चरण दे नाल अड़या वे, सानूं वी ले चल नाल६ ॥

मेरी बइयां पकड़ लो बनवारी।
मेरे बाँके बिहारी जय हो तिहारी, जय हो···॥
ना तन ही रहा ना मन ही रहा,
पग धूलि बना लो इक बारी।
रूप और गुण कुछ नहिं मुझ में,
प्रभु मुझे अपना बना लो इक बारी ॥ मेरी० ॥
माना कि मैं इस योग्य नहीं,
मोहे दर्श दिखा दो इक बारी ॥ मेरी० ॥

श्री वृन्दावन धाम अपार तू जपे जा राधे राधे,
तू वृन्दावन में आयो तूने राधा नाम न गायो।
तेरा जीवन है धिक्कार, रटे जा राधे राधे ॥
तुम वृन्दावन में जाना श्री राधा–राधा गाना,
तेरा हो जाये बेड़ा पार, जपे जा राधे राधे।
यह वृन्दावन की लीला मत समझो गुड़ की चीला;
राधा सब वेदों की सार, जपे जा राधे राधे।
यह वृन्दावन के वासी सब गोपी भाव उपासी,
यहाँ ब्रह्मा जावें मन हार, जपे जा राधे राधे।
व्रज रसिकों की रजधानी यहां मुक्ति भरे नित पानी,
जाऊं चरणन पर बलिहार, जपे जा राधे राधे।
राधा बरसाने वाली प्यारी वृषभानु दुलारी,
याको दूल्हा नन्द कुमार, जपे जा राधे राधे।
जब राधा नाम न होतो तब जीवन कैसे होतो,
न होता श्री कृष्ण अवतार, जपे जा राधे राधे।

❀❀❀

सांवरे सुनो हमारी बात।
द्वार खड़ी इक पगली विरहन दर्शन को ललचात ॥
माना कि इस योग्य नहीं मैं तेरी कुछ कहलाऊं,

कोई वस्तु नहीं है ऐसी जो तेरी भेंट चढ़ाऊं।
मधुर तान नहिं रूप माधुरी कैसे तुझे रिझाऊं,
लोग कहें कि ये तेरी दासी दर दर ठोकर खात॥
सांवरे सुनो हमारी बात।
क्या कहते हो और कहीं जा अपना दर्द सुनाऊं,
कैसे हो सकता है छलिया दिल से तुम्हें भुलाऊं।
अपना लो या ठुकरा दो अब और कहीं ना जाऊं,
अब तो मोहे अपनी कर लो काहे को तरसात॥
सांवरे सुनो हमारी बात।
जले हृदय में प्रेम आग अब और सही ना जात,
निज जन का अपमान कहो क्या सह लोगे अब नाथ।
नंगे पांव दौड़े थे, प्रण वो, भूल गये क्या नाथ,
अब तो मुझे स्वीकार करो प्रभु जीवन वृथा ही जात॥

श्री राधे तोरे चरणन की रज पाऊं।
जो रज दुर्लभ शिव सनकादिक सोइ रज शीष चढ़ाऊं॥
बैठी रहूं कुञ्जन-कोनन में राधा श्याम को गाऊं।
श्री राधे……॥

पागल होकर रोऊं हसूं मैं कभी नाचूं कभी । श्रीराधे···
बृजमण्डल की तू है स्वामिनि छोड़ तुझे कित जाऊं;
दरस आस की जीवन राधे विमल विमल यश गाऊं ।
श्री राधे तोरे चरणन की रज पाऊं ॥

राम रतन धन पायो पायो जी मैंने ।
वस्तु अमोल दई मेरे सतगुरु कृपा कीन्ह अपनायो ॥
जन्म-२ की पूंजी पाई जग में सभी खो आयो ।
खर्च न खूटें चोर न लूटें दिन दिन होत सवायो ॥
सत की नाव खेवइय्या सतगुरु भवसागर तर जाय।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर हर्ष हर्ष यश गायो ॥

—००—

卐 अरदास 卐

भगवान ऐहो अरदास मेरी ए ।
छे महान चरणा दे पास मेरी ए ॥
पिछले पापां वल न तकीं अगा गुनाह कोलों डकी,
हरदम नजर मेहर दी रखीं मेहरवान विनती ए
खास मेरी ए । भगवान ऐहो अरदास मेरी ए··

तेरे चरणा ते सिर रखां धोवां चरण मैं भर अखां,
तू ही उठावे तां सिर चकां,
जाणी जान मुदतां तों आस मेरी ए। भगवान…।
तेरयां गीता बाज न जीवां वांग पपीहे पागल चीवां,
स्वाती बूंद नाम दी पीवा, दयावान सदियां तों-
प्यास मेरी ए। भगवान…।
आ हुन छाती नाल लगा ले, तत्तयाँ थम्बयाँ तों बचा ले,
बूंद समुद्र विच मिला ले, ब्रह्मज्ञान आत्मा उदास मेरी ए,
भगवान ऐहो अरदास मेरी ए॥

हे मेरे गुरुदेव करुणा सिन्धु करुणा कीजिये।
हूं अधम आधीन अशरण अब शरण में लीजिये॥
खा रहा गोते हूं मैं भवसिन्धु के मझधार में।
आसरा है दूसरा कोई न अब संसार में॥
मुझमें है जप तप न साधन और नहिं कुछ ज्ञान है।
निर्लज्जता है एक बाकी और बस अभिमान है॥
पाप बोझे से लदी नैया भंवर में आ पड़ी।
नाथ दौड़ो अब बचाओ जल्द डूबी जा रही॥

आप भी यदि छोड़ देंगे फिर कहां जाऊँगा मैं।
जन्म दुख से नाव कैसे पार कर पाऊंगा मैं॥
सब जगह मंजुल भटक कर ली शरण अब आपकी।
पार करना या न करना दोनों मरजी आपकी॥

卐

जिसके हृदय हरि सुमिरन होगा,
उसका सफल क्यों ना जीवन होगा।
भक्त का भगवान को भी चिन्तन होगा,
उसका सफल क्यों ना जीवन होगा॥
सच्ची धारणा से प्रह्लाद ने जो ध्याया था,
खम्भे में भक्त ने श्रीरामजी को पाया था।
जिस की जिह्वा में रघुनन्दन होगा,
उसका सफल क्यों ना जीवन होगा॥
द्रोपदी ने बांधा केवल चार कच्चे धागों में,
बदले में भेजी थीं साड़ियां हजारों में।
जिसका सहायक मन मोहन होगा,
उसका सफल क्यों न जीवन होगा॥
भक्तों को तारने जो तारनहार आये थे,
जङ्गलों में जूठे बेर भीलनी के खाये थे।

कहती थी कभी प्रभु दर्शन होगा,
उसका सफल क्यों न जीवन होगा ।।
बनके वैरागी गीत रामजी के गाये जा,
तेरी सारी मुश्किलें आसान वह बनायेगा ।
पेटी में जिसके राम नाम धन होगा,
उसका सफल क्यों न जीवन होगा ।।

❀ ❀ ❀ ❀

किदरे मिल जाए राधा दा प्यारा कि पत्ता२ छान मारया,
किदरे मिल जाए गोपियां दा प्यारा कि पत्ता पत्ता···।
जिन्द जान कीती नन्द के हवाले मैं,
दुध दे भुलेखे पी गई जहर दे प्याले मैं ।
अपने रूप दा दे गया लशकारा कि पत्ता पत्ता छान...।।
बड़ा ए कठोर नी सतावे जानी जान के,
दे गया दिलासा मैंनूं सपने च आनके ।
नाले मिलन दा दे गया लारा, कि पत्ता पत्ता छान···।।
सुबह शाम गान मेरे घुंघरू
रूठे हुए शाम नूं मनान मेरे घुंघरू ।
ओहदे चरणा तों तन मन वारां, कि पत्ता पत्ता छान···।।

व्रज देयां वासियां ने तोड़ आशा मेरियां,
पेंडे बड़े लम्बे ने ते रातां ने अंधेरियां ।
अस्सां देखना वे मुखड़ा प्यारा, कि पत्ता पत्ता छान···॥

—❋—

ऐसे ज्ञान वाली गठरी न खोल ऊधो,
रख इसनूं संभाल के तू कोल ऊधो ।
बेला काहनू एवे मगज खपाई जाना ए,
कोई प्रेम वाला गीत मुहों बोल ऊधो ॥
नहीं लोड़ सानूं तेरे इस ज्ञान ध्यान दी,
एवे फोलिया ए पोथियां न खोल ऊधो । ऐसे···
सानू दस के डरावे रस्ते पुन्य पाप वाले,
किसे होर दा द्वार जाके टोल ऊधो ।
जिन्हा प्रेम वाली गल विच पाई अपनी,
इन्हा जग वाली लाज पीती घोल ऊधो ॥
इक वारी जे तू प्रेम दा स्वाद वेखया,
सारी खुल जासी तेरी वे पोल ऊधो ।
ऐसे ज्ञान वाली गठरी न खोल ऊधो,
रख इसनूं संभाल के तू कोल ऊधो ॥

❋—०—❋

प्रभु प्रेमी का मग न्यारा है ।
नहिं वेद पुराणन गाया है जिन पाया हृदय छुपाया है ।
जो मोती सीप में भारा है, हरि प्रेमी का मग न्यारा है ॥
कभी प्रेमीके गुण गाते हैं कभी ध्यानमें ही रह जाते हैं ।
तब आता प्राणन प्यारा है, हरि प्रेमीका मग न्यारा है ॥
पागल-२ जग कहता है वह रोता तो जग हंसता है ।
नहिं प्रेम का कोई किनारा है प्रभु प्रेमी मग न्यारा है ॥

यह गर्व भरा मस्तक मेरा प्रभु चरण धूलि में झुकने दो ।
अहंकार भरे मन को मेरे निज प्रेम की माला जपने दो ॥
खोटा हूं प्रभू या मैं हूं खरा अब शरण तिहारी आ ही गया
मैं प्रेमी हूं ठुकरा न मुझे गिर पड़ा हूं तो अब उठने दो ॥
यह गर्व भरा मस्तक मेरा अज्ञान की बातों में खाया ।
सब रैन नींदभर मैं सोया अपने चरणोंमें अपना लो मुझे ॥
जग सोये मुझको जगने दो, यह गर्व भरा मस्तक…॥

हमारे मन हरि सुमिरन धन भावे ।
आखें बन्द करूं तो इसको कोई देख नहिं पावे,

बाहर खोल धरूं तो इसको कोई नहीं चुरावे ॥ हमारे०
आंधी नहीं उड़ावे इसको पानी नहीं गलावे ।
अग्नि चाहें कैसी सुलगे इसको नहीं जलावे ॥
भाई बेटा साथी संगी कोई काम नहिं आवे ।
पावे जो प्रभु प्रेम खजाना शहन शाह बन जावे ॥
पर्वत नहीं धरावे इसको नदियां नहीं समावे ।
चोर नहीं चुरावे इसको निस दिन बड़ता जावे ॥

—**— 8988

रे मन ओटि लेहु हरि नामा ।
जाके सिमरनि दुरमति नासे पावहि पद निर्वाना ॥
बड़भागी तिहि जन कउ जानउ जो हरि के गुन गावै ।
जनम जनम के पाप खोइ कै पुनि बैकुण्ठ सिधावै ॥
अजामील कउ अन्त समय में नारायन सुधि आई ।
जा गति कउ जोगीसुर वांछत सो गति छिन महि पाई ॥
नाहिन गुन नाहिन कछु विदियाधरमु कउन भज कीना ।
नानक विरदु राम का वेखो अभय दान तेहि दीना ॥

—००—

सब कुछ जीवन को व्यवहार ।
मात पिता भाई सुत बान्धव अरु पुनि गृह की नार ॥

तन से प्राण होत जब न्यारे टेरत प्रेत पुकार।
एक घरी कोउ नाहीं राखत घर से देत निकारि॥
मृग तृष्णा सों जग रचना यह देखो हृदय विचारि।
कह नानक भज राम नाम नित जासों होइ उद्धार॥

—★★—

मेरे मन हरि सिउं लागी प्रीत।
साध संग हरि हरि जपत निर्मल सांची रीति॥
दरसन की प्यास घणी चितवत अनिक प्रकार।
करहु अनुग्रह पार ब्रह्म हरि कृपा धारि॥
मन प्रदेसी आइया मिलियो साध के संग।
जिस बखरु कोइ चाहता सो पाइयो नाम ही रंग॥
जेते माइया रंग रस बिनस जाहिं छिन माहिं।
भक्त रत्ते तेरे नाम लियो सुख भुंचहि सब ठांहिं॥
सब जग चलता पेखिये निश्चल हरि को नाऊं।
कर मित्रतायी साध संग निश्चल पावहिं ठाऊं॥
मीत साजन सुत बन्धया कोऊ होत न साथ।
एक निबाहू राम नाम दीना का प्रभु नाथ॥
चरण कमल रोहित भए लागी सागरु तरियो नेह।
भेटियो पूरा सत्तगुरु साचां प्रभु सिउं नेह॥

जो तुम भावें सो भला तेरे भान कारज रास ।
सुख सागर प्रीतम मिले उपजे महा आनन्द ।।
कहो 'नानक, सुख दुख मिटे प्रभु भेंटे परम आनन्द ।।

★

काहे रे वन खोजन जाई ।
सर्व निवासी सदा अलेपा, तोही संग समाई ।।
पुहुप मध्य ज्यों बास बसत है, मुकुर माहिं जैसे छाई ।
तैसे ही हरि वसत निरन्तर घट ही खोजो भाई ।।
बाहिर भीतर एकहि जानो यह गुरु ज्ञान बताई ।
कह 'नानक' बिन आपा चीन्हें मिटै न भरम कि काई ।।

रमता राम राम मोरे जिया,
ज्ञानी ने गुप्त खजाना पा लिया ।
चतुष्टय साधन पलग बिछाया,
ब्रह्मज्ञान का तकिया लगाया ।
शान्ति का विस्तर बिछा लिया, रमता राम राम''।।
सहज समाधी निद्रा आयी,
जगत महल ना रहा दिखाई ।

अद्वैत राम पति वर लिया ज्ञानी ने,
जागृत स्वप्न सुषुप्ति उपाधी।
हम तो अखण्ड अद्वैत उपाधी,
इस निश्चय को मैं जमा लिया, ज्ञानी ने गुप्त…॥
ना कोई वैरी मीत हमारा,
जित वल वेखां तित वल प्यारा।
गुरु शक्ति है मन को अटका दिया, ज्ञानी ने गुप्त…॥
ज्यों सागर में बूंद समाई सन्त राम में भेद न कोई।
कर निश्चय मैं अजमा लिया, ज्ञानी ने गुप्त खजाना…॥

सिमरन में मन जोरे, सब पाप कटेंगे तोरे।
रे मन पाप कटेंगे तोरे, रे पापी मन तोरे पाप। सिम…
कामकाज में आयु बिताई हरी भजन की याद न आई।
दिन रहे अब तो थोरे, रे पापो मन थोरे थोरे। सिम…
भंवर गये सिर बगले आए जोत घटी मुखों बोल न पाए
तृष्णा अजे वी न छोड़े, रे पापी मन छोड़े। सिमरन…
कहत सरंगि छोड़ दे रंगी दुनिग्रां का तू मत बन संगी
रोक ले मन के घोड़े रे पापी मन घोड़े। सुमिरन…

—**—

लूट लो आकर जो भी चाहे शोर मचाऊं गली गली।
हरी नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊं गली गली॥
जिस जिस ने यह मोती लूटे वह सब माली माल हुये।
जो दुनियाँ के बने पुजारी आखिर वो कङ्गाल हुये॥
सोना चांदी माली वाली मैं समझाऊं गली गली।
हरी नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊं गली गली॥
इस दुनियां की आशा तब तक जब तक इसका ज्ञान नहीं।
रोम रोम में रम ना जावे वो कोई भगवान नहीं॥
राम कृष्ण और गोविन्द का मैं नाम जपाऊं गली गली।
हरी नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊं गली गली॥
जिन भक्तों ने कैसे कैसे हरी का दर्शन पाया है।
और भगवान ने कैसे कैसे भक्तों को अपनाया है॥
शबरी तुलसी मीरा का इतिहास सुनाऊं गली गली।
हरी नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊं गली गली॥
अर्जुन को जब मोह ने घेरा तब प्रभु ने उपदेश दिया।
ज्ञान की ज्योति जगाई ऐसी संशय भ्रम सब दूर किया॥
रामायण और गीता का सन्देश सुनाऊं गली गली।
हरी नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊं गली गली॥

—०❀०—

मना छड दे सोच विचार,
रख भरोसा रब दा वन्दे ओो सबदा रखवाला है।
छड दुनियां दे खोटे धन्धे अपने मन नूं मार ॥ हरी...
दुनियां दुश्मन फिकर न करिये अपने रब नूं ध्याये जा।
करे वो बेड़ा पार सभी का ओो सबका रखवाला है॥
सोच तेरी कुछ काम न आवे उल्टा फिकर ते दिल नूं खावे
कर देवे मुरदार राम रखवाला है॥
होवे जेड़ा प्रभु नूं भावे सोच फिकर मूरख सों बंधावे।
वन्दे ! मन में धीरज धार राम रखवाला है॥

दुनियां में जो आया है तो कर प्यार प्रभू से,
जो मांगना है मांग लो दातार प्रभू से।
धन माल जो तुमको है मिला किसने दिया है,
जीवन का यह सुख भोग बता किसने दिया है।
क्यों भूला है सब मिलता है दरबार प्रभू से,
जो मांगना है मांग लो दातार प्रभू से॥
संसार की मोह माया में क्यों मन को लगाया,
हीरा जन्म किस लिये यों खाक मिलाया।

कर याद जो कर आया था इकरार प्रभू से,
जो मांगना है मांग लो दातार प्रभू से ॥
जीवन जो सफल चाहे तो मन सफल बना ले;
जगदीश की भक्ति की वह फिर ज्योति जगा ले ।
मांगे हैं हम तो यही तू कर प्यार प्रभू से,
दुनियां में जो आया है तो कर प्यार प्रभू से ॥

—००—

तेरे प्यार से ऐसी मस्ती चढ़ी,
तू मैं हो गया मैं तू हो गया ।
जैसे जल में बरफ का टुकड़ा पड़ा,
कुल मिलकर कोई भेद ही न रहा ।
जल में जल का ही रूप बना ॥ तू मैं हो गया…
वसुधा से जमीं ऊपर को उठी,
सूरज की किरण सूरज में छिपी ।
फिर नाम रूप का भेद कहाँ,
तू मैं हो गया मैं तू हो गया ॥
जब वायु वेग प्रचण्ड हुए,
आखिर आकर वसुधा से मिले ॥ तू मैं हो गया…

ज़ब कर्म की भीतें टूट गईं,
तो घटाकाश महाकाश हुये ॥

मोहन दा मिलना सोखा नहीं,
जिंद तली ते धरनी पैन्दी ए।
हर इक दी सैनी पैंदी ए,
घर बाहर दे वन्दे वैरी ने।
दुख रज रज देन दे कैरी ने,
गल सबर दी करनी पैंदी ए ॥ जिंद तली...
जेड़े उसदी राह वल जान्दे ने,
मन अपना मार मुकान्दे ने।
फिर दर्श मोहन दा पान्दे ने,
ऐनी कीमत भरनी पेंदी ए ॥ जिंद तली दे...

जेड़ी बिन पीतयां चढ़ जावे रत्ती तेरे नाम दी चंगी,
जेहड़ा पीवे अमर हो जावे रत्ती तेरे नाम दी चंगी।
इक रत्ती धन्ने ने पाई पत्थर विचों जोत जगाई,
पैया रब दे दर्शन पावे रत्ती तेरे नाम दी चंगी॥

जहर प्याला मीरा पीता गिरधर दा दर्शन कीता,
पई हार शाम गल पावे रत्ती तेरे नाम दी चंगी।
पहले मन नूं साफबनावीं फिर जगदीश दे दर्शन पावीं ।।
तेरी बिगड़ी आप बनावे रत्ती तेरे नाम दी चंगी।
जेहड़ा पीवे अमर हो जावे रत्ती तेरे नाम दी चंगी ।।

卐

मेरा सतचित आनन्द रूप कोई कोई जाने रे,
सकल प्रपञ्च का मैं हूँ सृष्टा,
मन वाणी का मैं हूँ दृष्टा।
मैं हूँ साक्षी रूप, कोई कोई जाने रे ।।
पांच कोष से मैं हूँ न्यारा,
मन बुद्धि का जानन हारा।
अनुभव सिद्ध अलेप, कोई कोई जाने रे ।।
जन्म मरण मेरे धर्म नहीं हैं,
पाप पुण्य मेरे कर्म नहीं हैं।
अज निर्लेपी रूप, कोई कोई जाने रे ।।
सूर्य चन्द्र में तेज है मेरा,
अग्नि ताप में ओज है मेरा।

मैं हूँ ज्योति स्वरूप, कोई कोई जाने रे ॥
तीन लोक का मैं हूँ स्वामी,
घट घट व्यापक अन्तर्यामी।
ज्यों माला में सूत, कोई कोई जाने रे ॥
उठो जागो निज रूप पहचानो,
जीव ब्रह्म में भेद न जानो।
मैं हूँ ब्रह्म स्वरूप, कोई कोई जाने रे ॥

मना चल ओथे चल बसिये,
ओथे न कोई मां और बाप है।
ओथे न कोई बहन न भाई,
मना चल ओथे चल बसिये ॥
जित्थे सन्त समाधि लावदे ने,
ओत्थे प्रेम दा वगे दरिया। मना चल ओथे...
जित्थे लोग बोलियां न मारदे ने,
ओत्थे सजना दे दिल दरिया।
मना चल ओथे चल बसिये,
जित्थे भूख न प्यास सतांवदी।
तू तां इक रस हो जा। मना चल ओथे चल...

बहिनो सतगुरु शरणी आयो
ओ तां दें दा रास्ता बना । मना चल ओथे···
बहिनों प्रभु की शरणी आयो
ओत्थे आवागमन मिटा ।
जित्थे रहन दे ने शाहन शाह । मना चल ओथे···

❀ ❀ ❀ ❀

ऊधो मुझे सन्त सदा अति प्यारे,
जा की महिमा वेद उचारे ।
मेरे कारण छोड़ जगत के भोग पदारथ सारे,
निशि दिन ध्यान धरें हृदय में,
सब घर के काज विसारे । ऊधो मुझे सन्त··स
मैं सन्तन के पीछे जाऊं जहां जहां सन्त सिधारे ।
चरणन् रज निज अङ्ग लगाऊं साधे गात हमारे ॥
संत मिले तब मैं मिल जाऊं संत न मुझसे न्यारे ।
बिन सन्तन मुझे पावे नहीं कोटि जतन करि डारे ॥
जो संतन के सेवक जग में सो सेवक हैं मेरे ।
ब्रह्मानन्द संत कृपा से भव बन्धन कटि डारे ॥

ऐसा कोई सन्त मिले जेड़ा तार हरी नाल वे जोड़े,
सन्त मिलन दा बड़ा महत्तम दुर्लभ देह है सन्त समागम,
जेड़ा सुतयां नू ज्ञान जगावे ऐसा कोई सन्त मिले,
जेड़ा मन दीयां वगां मोड़े कि ऐसा कोई उपदेश मिले।
इक मनीराम दे पञ्च हैं वैरी, पांच ने वैरी हो हैं नाग ने जहरी
जेड़ा पञ्जां विचों इक वी न छोड़े, ऐसा कोई सन्त मिले।
मनवा इधर उधर क्यों फिरया चञ्चल मन नूं वश नहिं करिया
जेड़ा मोह दे बन्धन तोड़े, ऐसा कोई सन्त मिले।
ऐसा कोई उपदेश सुनावे सुनकर मनवा अमल कमावे,
मन इधर उधर ना भटके, ऐसा कोई सन्त मिले।

मन तो मेरा हर लिया गोविन्द माधव श्याम ने,
कृष्णा कृष्णा मैं पुकारूं तेरे दर के सामने।
बंसी वाले अपनी वंशी फिर सुनाजा आनकर,
तेरी चर्चा हम करेंगे हर बशर के सामने। मन०
खम्भ से प्रह्लाद को तूने बचाया आनकर,
द्रोपदी की लाज राखी कौरव दल के सामने। मन०
मेरी ख्वाहिश है फकत कृष्णा तेरे दीदार की,
इस लिये धूनी रमाई तेरे दर के सामने। मन०

कृष्ण जी इस दासी को दर्शन दिखा दो आनकर,
मैं तुम्हारे सामने हूँ तुम हमारे सामने । मन०

—★★—

दाता तेरा मेरा प्यार कदी न बदले,
चाहें सूरज बदले चाहें चाँद बदले ।
राम (श्याम) तेरा मेरा प्यार कदी न बदले ॥
चाहें आकाश बदले चाहें धरती बदले ।
चाहें सास बदले चाहें ससुर बदले ॥
दाता तेरा मेरा प्यार कदी न बदले ॥
चाहें भाई बदले चाहें बहिन बदले ।
चाहें सुख बदले चाहें दुख बदले ॥
राम तेरा मेरा प्यार कदी न बदले ॥

—००—

हरि (प्रभु) को सिमर तेरा जीवन बीता जाए,
हरि के बिना न कोई बिगड़ी बनाए रे, बिगड़ी०
दुनियां की चीजों में ढूंढ़ता तू सुख है,
मिलता तुझे सुख की जगह भी दुख है ।

उसका जो बन जाए पाए सदा सुख रे । सदा सुख०
दुनियाँ में दुनियां का तू बन न दिवाना,
दो चार दिन तेरा इसमें है ठिकाना।
मोह न लगा न लगा तू यह है सराय रे । हरि०
तन से तू कर सारे दुनियां के धन्धे,
मन से तू कर याद ईश्वर को वन्दे।
भोग होते हुए भी तू योगी बन जाए रे ॥ हरि०
उस मालिक की सच्ची दासी बन ऐसी,
तुलसी कबीर ध्रुव प्रह्लाद जैसी।
मरने के बाद दुनियां यश तेरा गाए रे । हरि०

—०—

मीरा ले ले तेरा नाम
ठूठे बन बन शाम लोकी हंसन ते आखन दिवानी हो गई,
राणा ने भेजा जहर दा प्याला,
मारे ओनूं कौन जेहदा शाम रखवाला,
कहती दुनियां तमाम मीरा हो गई बदनाम । लोकी…
राणा ने भेजी जहर पिटारी,
मीरा ने पाये दर्शन कृष्ण मुरारी,
छडे सारे धन धाम, छडे महलां ते आराम । लोकी…

पैरां विच घुंघरू ते हथ कड़ताला,
नाच नाच फेरे मीरा नाम दी माला,
कहदी दुनियां तमाम मीरा हो गई बदनाम । लोकी...

—※—

हेरी मैं तो प्रेम दिवानी मेरा दरद न जाने कोइ,
घायल की गति घायल जाने जो कोई घायल होइ ।
जौहरि की गति जौहरि जाने जो कोइ जौहरि होइ,
सूली ऊपर सेज हमारी केहि विधि सोवन होइ ।
गगन मंडल पे सेज पिया की किस विध सोवन होइ ॥

卐

अखियां खोल राम वल वेख,
तेरे मिट जायेंगे सकल कलेश ।
ऐ बंगला किस काहु ने घड़या,
बिन बालू बिन रेत । अखियां...
इस बंगले दे नौ दरवाजे,
अन्दर बड़ के वेख । अखियां...
इस बंगले दी तीनसौ साठ पौड़ियां,
ऊपर चढ़ के वेख । अखियां...

इस बंगले विच कौन कौन वसदा,
ब्रह्मा विष्णु महेश । अखियां···
इस बंगले विच जोत है जगदी,
विन बत्ती विन तेल । अखियां···
टुट गई रसियां ते बुझ गई जोती,
हो गई बालू रेत । अखियां···

—०❀०—

तेरा मान बधाया तेरयां भक्तां ने,
तेरी आरति पूजा कर कर के,
तैनूं सिरे चढ़ाया तेरयां भक्तां ने ।
तेरी पूजा कीती अर्जुन ने,
तेरी सेवा कीती अर्जुन ने ।
रथवान बनाया तेरयां भक्तां ने,
तेरा मान बधाया तेरयां भक्तां ने ।
तेरी आरति कीती द्रोपदी ने,
तेरी सेवा कीती द्रोपदी ने ।
भरी सभा दे विच बुलाया तेनूं भक्तां ने । तेरा मान···
तेरी आरति कीती मीरा ने, तेरी पूजा कीती मीरा ने,
विष यों अमृत बनाया तेरयां भक्तां ने । तेरा मान···

तेरी पूजा कीती धन्ने ने तेरी सेवा कीती धन्ने ने,
तेनूं पथ्थरां तों प्रगटाया तेरयां भक्तां ने । तेरा मान…
तेरी आरति कीती प्रह्लाद ने तेरी सेवा कीती प्रह्लाद ने,
गरम खम्भे से प्रगटाया तेरयां भक्तां ने । तेरा मान…
तेरी सेवा कीती भीलनि ने तेरी पूजा कीती भीलनि ने,
जूठे बेरयां नाल रिझाया तेरयां भक्तां ने । तेरा मान…
तेरी आरति कीती सखियों ने तेरी पूजा कीती सखियों ने,
तेनूं नाच नचाया तेरयां भक्तां ने । तेरा मान…

—✲✲—

शामां ने भेष बनाया शाम चूड़ी बेचने आया,
चूड़ी की आवाज सखियों ने सुनी,
सखियों ने सुनी ललिता से कही ।
राधा ने टेर बुलाया शाम चूड़ी बेचने आया ॥
चूड़ी की डलिया शाम आंगन धरी,
चूड़ी का मेल बनाया । शाम चूड़ी…
एक हरी एक पीली चूड़ी लाल का बन्द लगाया,
चूड़ी ऐसी पहनायो जिसमें मोहन मिले,
जिसमें मोहन मिले जिसमें शाम मिले ।
गलियों में शोर मचाया । शाम चूड़ी बेचने…

दीना बन्धू तेरे कोलों एहो कुछ मंगदा,
ऐहो कुछ मंगदा कदी वी न संगदा । दीनाबन्धू०
सुवह उठ स्नान होवे तेरी भक्ति दा दान होवे,
तेरे चरणां दा ध्यान होवे ऐहो दिल मंगदा । दीना०
शाल दुशाले होवां ना, खद्दर दा वेश होवे,
घर विच होवां, ते चाहे मैंनू परदेश होवे,
वेला न बजावां प्रभु तेरे सत्सग दा । दीना०
देही आरोग होवे ते भावे कोई रोग होवे,
हर्ष विच होवां, ते भावे कोई सोक होवे,
प्रेम प्याला पीवां तेरे ही आनन्द दा । दीना०
विषयां तों दूर करो, दूर करो दीनता,
दुखाँ नूं दूर करो मन दी मलीनता,
जन्म सुधारो प्रभु मुझ मतिमन्द दा । दीना०
सतचित तूं आनन्द मैं हां मति मन्द,
क्लेश तुम दूर करो काटो सारे फन्द,
रंग चढ़े प्रभु तेरे भक्ति दे रंग दा । दीना०
वैर न विरोध होवे, कपट ना क्लेश होवे,
लक्ष्मी गोगिया दा ज्ञान उपदेश होवे,
ऐहो दिल मंगदा, दीना बन्धू तेरे कोलों···॥

मैया मेरी मैं नहिं माखन खायो
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुवन मोहि पठायो।
चार पहर वंशी बट भटक्यो साँझ परे घर आयो॥
मैं बालक बहियन को छोटो छींको केहि विधि पायो।
ग्वाल बाल सब वैर परे हैं, बर बस मुख लपटायो॥
तू जननी मन की अति भोरी, इनके कहे पतियायो।
जिय तेरे कछु भेद उपजिहै, जानि परायो जायो॥
यह ले अपनी लकुट कमरिया बहुतहि नाच नचायो।
'सूरदास' तब विहँसि जसोदा ले उर कण्ठ लगायो॥

नी मैंनूं गुरां जी दे दर्शन कर लेन दे,
कर लेन दे नी संगतें कर लेन दे। नी मैंनूं...
दूरों चल आई दाता कूकर तेरे दर दी,
नी मेरा खाली है भण्डारा। मैंनूं कर लेन दे...
हट जावो संगतें हटाओ न सेवको,
टिकट लैन देवो, रोक पावो न सेवको,
नी मैंनूं सच्च खंड वाली गड़ी चढ़ लैन दे। नी...
कालू जी दा पुत्र नी ओ तां नानकी दा वीर जो,

बेड़े पार लावें ओ तां नदीया नूं चीर नी,
नी मैंनूं भव सागर तों तर लेन दे। मैंनूं गुरु···
घट घट दी जाने, ओ तां पट पट दी जानदा,
भले बुरे नूं ओ तां आप ही पहिचानदा
नी मैंनूं अपने गुरां दा ध्यार कर लैन दे। मैंनूं···

※ सबसे प्रेम करो ※

ध्यान लगाना भूल न जाना सबसे प्रेम बनाना। भूल०
प्रेम का दर्जा सबसे ऊंचा नीचे ना गिर जाना। भूल०
इस दुनियां में खाली हाथों जैसे हुआ था आना,
उसी तरह से मूरख वन्दे होगा खाली जाना,
एक प्रभू के सब ही वन्दे बाँट बाँट कर खाना। भूल०
एक देश के वन्दे हो तुम भाई सब कहलाना,
ना वैरी ना दुश्मन कोई जग में नाम कमाना। भूल०
बनाओ अपना जीवन ऐसा धन धन कहे जमाना,
न धन तेरा न यह धरती यह है देश खजाना। भूल०
अमीर गरीब में फरक न कोई छूत अछूत मिटाना,
धन और धरती सबकी होगी यह जगदीश का गाना॥

* अभिमान कैसा ? *

न कर अभिमान ऐ मूरख तू दुनियां छोड़ जाएगा,
यह मेला चार दिन का है तू रिश्ता तोड़ जाएगा।
किसे अपना बनाता है तू किससे दिल लगाता है,
कोई साथी नहीं तेरा तू मुखड़ा मोड़ जाएगा।
यह तेरा है यह मेरा है यह झूठी चाल जग की है,
ममता जाल में फंसकर यूं ही जीवन गवाएगा।
वक्त पर धोखा दे बैठे जो बने फिरते थे तेरे,
किये हैं कर्म जो तूने उसी का फल तो पायेगा।
अभी बिगड़ी नहीं कुछ भी कर्म अपने कमा ले तू,
समझ प्यारे तेरे शुभ कर्म ही तुझको बचायेंगे।

—* आत्म-ज्ञान *—

बंगला भला बना दर वेश जिसमें नारायण प्रवेश,
पांच भूत की ईंट बनाई तीन गुणों का गारा,
छत्तीसों की छत्त डाल कर चिन गया चिनने हारा।
इस बंगले में दस दरवाजे बीच भवन में खम्भा,
आता जाता नजर न आवे यही है बड़ा अचम्भा।

इस बंगले में ऊपर नीचे मनवा नाल न जावे,
आशा तृष्णा बांध के घुंघरू राग छत्तीसी गावे।
इस बंगले में चोपड़ बिछ रही खेले पांच पचीस,
कोई बाजी हार चला है कोई चला है जीत।
कह मच्छर सुन जाती गोरख जिन ये बंगला गाया,
इस बंगले का जानन हारा फिर ना जग में आया।

मेरे मालिक की दुकान पर सबका जीवन खाता है।
जितना जिसके भाग्य में होता उतना ही वह पाता है॥
क्या साधू क्या सन्त गृहस्थी क्या राजा क्या रानी,
उसकी पुस्तक पर लिखी है सबकी प्रेम कहानी।
लेन देन और जमा खर्च का सही हिसाब लगाता। मेरे०
बड़े बड़े कानून प्रभू के बड़ी बड़ी मर्यादा,
किसी को कौड़ी कम ना देता और न दमड़ी ज्यादा।
इसी लिये वह सारे जग का जगत सेठ कहलाता। मेरे०
डट जाता जब आसन पर है सही हिसाब लगाता,
लेन देन सब जमा खर्च का सही हिसाब बनाता।
समझदार चुप चाप है रहता मूरख शोर मचाता। मेरे०
अच्छी करनी करियो भैया कर्म न करियो काला,

लाख आँख से देख रहा है तुम्हें देखने वाला।
पुण्य की नाव तो पार लगाता पाप की नाव डुबाता॥

—०❀०—

जिस घर दा मालिक जगदा ए,
ओथे चोर भला सन जावे क्यों।
जिस दिल विच साईं वाला प्यार होवे,
उन्हें दुनियां दा मोह सतावे क्यों॥
जिथे सत दा नित्य प्रकाश होवे,
ओथे भूठ भला रह जावे क्यों।
जिन्हां रब नाल अखियां लाइयां ने,
उन्हें अपनी होश रह जावे क्यों॥
गल पइयां प्रेम दीयां काइयां ने,
ओह दुनियां तों डर जावे क्यों।
जिन्हां समझया दुनियां फानी ए,
सोई दुनियां तों रम जावे क्यों॥
जिन्हां शीश तली उत्ते रखया ए,
सेवा दा आनन्द चखया ए।
जिस दिल विच प्रभु वाला प्यार होवे,
उसे दुनियां दा मोह सतावे क्यों॥

हीरा जन्म अनमोल मिला प्रभु गुण गाने के लिये,
माया का यह जाल बिछा भरमाने के लिये।
काम क्रोध में फंसकर बन्दे मोह ने तुमको घेरा है,
लोभ ने ऐसा चक्कर डाला,
जमा लिया अहंकार ने डेरा।
कुदरत ने भेजा था तुझे प्रभु पाने के लिये,
माया का यह जाल बिछा भरमाने के लिये।
चले गये इस दुनियां से रावण जैसे अहंकारी,
कहां से ढूढ़ें भीमसेन और अर्जुन जैसे धनुधारी।
दुनियां एक सराय है बन्दे आने जाने के लिये,
माया का यह जाल बिछा भरमाने के लिये॥
इस बेदर्दी दुनियां में कोई नहीं अब तेरा है,
ना घर तेरा ना घर मेरा चिड़िया रैन बसेरा है।
मूरख तुझको जनम दिया अजमाने के लिये,
माया का यह जाल बिछा भरमाने के लिये॥
जिसने तेरा नाम लिया भवसागर से वह पार हुआ
गणिका अजामिल बालमीक,
ध्रुव तक को तूने तार दिया।

बिगड़ी हुई तकदीर संवारो प्रभु पाने के लिये ।
माया का यह जाल बिछा भरमाने के लिये ॥

दर्शन तो दिखाओ मोहन भक्तों के तुम रखवारे हो,
इक बार तो आ मोहन भक्तों के तुम रखवारे हो ।
दीनों के बन्धु हो हर लाज बचावन हारे हो,
द्रुपद सुता की लाज बचाई लाखों चीर बढ़ाये ।
नरसी भगत की हूँडी तारी सांवल शाह बन आये,
बिगड़ी की बना मोहन भक्तों के तुम रखवारे हो ।
गज की टेर सुनी जब माधो नंगे पांव पधारे,
जब जब भीर पड़ी भक्तों पर आप बने रखवारे ।
ले कर शरण दीन दुखियों को तुमने दिया सहारा,
मीरा बाई सदन कसाई पार अहिल्या कीन्हीं ।
चरणों में लगा मोहन भक्तों के तुम रखवारे हो,
दासी तेरी अरज गुजारे आजा नन्द दुलारे ।
मेरी अब तो लाज बचा ले भक्तों के रखवारे,
नहीं तो दुनियां लांछन देगी कैसे हो रखवारे ।

—★★—

शाम तेथों दूर नहीं तेरा वी कसूर नहीं,
वेखन वाली अख जेड़ी ओदे विच नूर नहीं।
प्रभु मिलन दा रंग निराला, सुनो जरा कन लाके हो,
नुक्सा इक बतलावां तैनूं वर्ती ओनूं जाके हो। शाम०
भक्ती रूपी सुरमा लेके ज्ञान खरल विच पा लेवों,
प्रेम दे बट्टे नाल रगड़ के खूब बरीक लगा लेवो।
समता रूपी लेके सलाई सुरमा अख विच पा लेवो,
वग जावे अज्ञान दा पानी हो जावे उजियाला।
दासी ने जद सुरमा पाया हो गई आंख नूरानी है,
ठूंठ के अन्दरों सोना मिलया मेरे दिलवर जानी हो॥

—※※—

मेरे बाल कन्हैया तुर आ जइयो,
बुला रही दासी तुम्हारी,
मेरे श्याम सुन्दर घर आ जइयो, बुला रही दासी…
प्रभु माखन मिसरी खा जइयो, " " "
बुला रही दासी तुम्हारी, बुला रही मैया तुम्हारी,
प्रभु अपना दरस दिखा जइयो, " " "
चित चोर कन्हैया आ जइयो, " " "
प्रभु रास रचैया आ जइयो, " " "

बुला रही दासी तुम्हारी कन्हैया बुला रही मैया तुम्हारी,
मेरे प्यारे भगवन आ जइयो, बुला रही दासी...
प्रभु खीर का भोग लगा जइयो, ,, ,,
हरि लीला धारी आ जइयो, ,, ,,
बुला रही दासी तुम्हारी बुला रही मैया तुम्हारी।

❀ ❀ ❀ ❀

धन धन श्री रामचन्द्र धन अवतार तेरा,
पैसा न मेरे पल्ले देह वो न मेरी चले,
पत्रां सत्तां फुलां नाल करांगी शृङ्गार तेरा। धन०
गहना न मेरे पल्ले पेश न मेरी चले,
खट्टे मिठ्ठे बेरां नाल करां सत्कार तेरा। धन०
महल न मेरा कोई झुग्गी न मेरी कोई,
मन दे मन्दिर विच करांगी दीदार तेरा। धन०
भिलनी सत्कर्म कमावीं मगयां मुरादां पावीं,
भक्ति दा दान देके करां बेड़ा पार तेरा। धन०

जित जित के बाजियां हारियां,
असां सुतयां उमरां गुजारियां।

हां ओए असां सुत्तयां उमरां गुजारियां ॥
मिलया जनम सी हरि गुन गान नूं,
आवागमन दे दुखड़े मिटन नूं—हां ओए···
असां वेलियां मोजां माणियां जित-२
सोहणो मथे ते याग लवा लिया,
असां सुतयां नाग जगा लिया—हां ओए···
खान लगा ए मार के फुकारियां, जित-२
जिन्हां नाम बीजया फल पा लेया—हाँ ओए
असां किकरा दा बाग लवा लिया,
भरियाँ कइयां नाल क्यारियाँ,
मन माया वेख के भुल वे,
जाना खाक मट्टी दे विच रल वे। हाँ ओए
कर लइयां ने जान दियां तैयारियां जिन जिन
मन न कर झगड़े झेड़े ओथे कोई न लगासिए
हरि नाम सिमर मन मेरियां, हरिनाम···॥

तूने कैसे रचा मेरे राम खिलौना माटी का।
तुझे कोई न सका पहिचान खिलौना माटी का ॥
आंख दी दर्शन करने को कान दिए सुन ज्ञान।
तूने कैसे रचा मेरे राम खिलौना माटी का ॥
पैर दिये तीरथ करने को हाथ दिए कर दान।
देह दई सत्संग करने को कर गगा स्नान ॥
जिह्वा दीन्हीं हरि सिमरनको करले हरि का गान।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो कर लो हरिका ध्यान ॥

मैं करां प्रेम दे नाल दरशन सतगुरु दा,
भगतां नू करे निहाल दर्शन सतगुरु दा।
एह हुन्दा कर्मा नाल दर्शन सतगुरु दा,
सतगुरु दे द्वारे उत्ते जगदी जोत निराली।
सतगुरु मेहरां वाले तों दुनियां जावे वारी,
धर्म दा झूले झण्डा सतगुरु जै हो तिहारी।
सतगुरु मेहर वाले दा कोई मन्दिर रंगरगीला,
प्रेम दे बाजे घर घर बजदे नाम दी होंदी लीला।

अन्दर ध्यान लगांदे जय हो,
आतमा दा दर्शन पांदे जय हो।
जड़त जड़ी सुनार किसने विच सोने दीया मेखां,
जी सतगुरु चमन रहे पलक पलक पई वेखां।
गये भक्त प्यारे जय हो,
बोलन जय जय कारे जय हो।
मिल गया सतगुरु मैं ऐहो कर हर वेले,
दर्शन सतगुरु दा... ... ...॥

मैंनूं भूले न सूरत प्यारे शाम दी,
भुल जाए सारी दुनियां।
भूले अभिमान ते भुल जाए मेरी,
इक भुले न शामा सूरत तेरी।
मैंनूं लगे वे समाधि तेरे नाम दी,
भुल जाए सारी दुनियां।
भुल जान साखियां ते भुलन सहेलियां,

इक भूले न शाम मुरति तेरी ।
मैंनूं चढ़े वे खुमारी तेरे नाम दी,
भुल जाए सारी दुनियां ॥
भुल जाए बाप ते भुल जाए भाई,
भुल जाए भैन ते भुल जाए माई ।
मैंनूं सुध न रहे वे खान पीन दी,
भुल जाए सारी दुनियां ॥

★

मन में सोच विचार बुल बुला पानी का,
दो दिन में उड़ जाए नशा जवानी का ।
यह पिंजरा हुआ पुराना इसमें पंछीने उड़ जाना
मिलया जन्म ए हरि गुन गान नूं ।
आवागमन दे दुखड़े मिटान नूं हां ओए,
असां वेलियां मोजां माणियां जित-जित ।
होया विषयां दे विच गलतान दे,
ऐथे घड़ी पलक दा मेहमान मेहमान दे–हाँ ओए
सब मतलब दे ने प्यारियाँ हरिनाम सिमर,
मन भोरया–हाँ ओए हरिनाम सिमर ॥

जरा आ शरण में तू राम की,
मेरा राम करुणा निधान है।
वही जगत का भगवान है।
घट-घट में है वही रम रहा,
वो तो जगत का भगवान है।
लिया आसरा जिस नाम का,
वही बन गया प्रभु राम का।
जिस नाम से पत्थर तरें,
उससे तेरा तरना आसान है।
मेरा राम निधान है,
वही जगत का भगवान है।
भक्ति में उसकी तू हो मग्न,
उसे पाने की तू लगा लगन।
तेरे पाप सब धुल जायेंगे,
प्रभु का नाम ऐसा महान है।
मेरा राम करुणा निधान है।
लगी भीलनी को यह आस थी,
कब बुझेगी प्रभु मेरी प्यास भी।

जूठे बेर खाए राम ने,
इसे जानता सारा जहान है ।
मेरा राम करुणा निधान है,
वही जगत का भगवान है ।
यह दासी कब से पुकारती,
तेरे चरणों में अर्ज गुजारती ।
मत भूल जाना ऐ प्रभु,
यह दासी तेरी अनजान है ।
मेरा राम करुणा निधान है,
वही जगत का भगवान है ॥

तेरे द्वारे ते आ गई बक्शन हारा तूं ही तूं ।
सारा जहान वेखया लगदा है प्यारा तूं ही तूं ।
पापाँ दे धुमन घरे विच बदियाँ दे घोर अंधेर विच ।
बेड़ी है डगमग डोलदी, सारु किनारा तूं ही तूं ।
अमलाँ दे लेखे नू खोली तूं,
रब्बाँ दे कन्डे नूं तोली तूं ।

भुलन हारा जहान है,
बक्शन हारा तूं ही तूं ।
मैं निमानी दा मान तूं,
अपना विरद पहचान तूं ॥
दस इन्नूं भक्ति दा दान दे,
दाता दुलारी तूं ही तूं ।
खाली द्वारे तों मोड़न,
तेरे बिना कोई होर ना ।
मैनूं ताँ तेरा आसरा,
मेरा सहारा तूं ही तूं ॥

—*—

ओ परदेशी बनो उपदेशी दूर तुम्हें जाना है ।
यह संसार झाड़ और झखड़ सुलग २ मर जाना-
दूर तुम्हें जाना । ओ परदेशी ··· ··· ॥
यह संसार काँटोंकी बाड़ी उलझ-उलझ मर जाना ।
ओ परदेशी बनो उपदेशी ··· ··· ··· ॥
यह संसार कागजकी पुड़िया बूंद पड़े गल जाना है ।
दूर तुम्हें जाना है । ओ परदेसी बनो उपदेशी···॥

कहत कबीर सुनो भई साधो,
सतगुरु नाम बखाना है ।
दूर तुम्हें जाना है ।
ओ परदेशी ... ...

॥ भजन ॥

प्यारे दर्शन दो आज, तुम बिन रह्यो न जाय ।
जल बिन कमल चन्द्र बिन रजनी,
ऐसे तुम देख्यां बिन सजनी ।
आकुल व्याकुल फिरूं रैन दिन,
विरह कलेजा खाए ॥ प्यारे दर्शन दीजो आज ॥
दिवस न भूख नींद नहीं रैना,
मुखसूं कथत न आवै बैना ।
कहा कहूं कछु कहत न आवै,
मिलकर तपत बुझाए ॥ प्यारे दर्शन दीजो आज ॥
क्यों तरसाओ अंतर्यामी,
आय मिलो कृपा कर स्वामी ।
मीरा दासी जन्म २ की,
पड़ी तुम्हारी पांव ॥ प्यारे दर्शन दीजो आज ॥

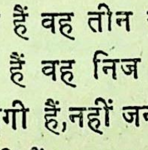
॥ भजन ॥ २

★

झोली ते मेरी फटी होई नी,
ज्ञान कित्थे पावां मैनूं समझ नहीं।
झोली ते मेरी विषयां भरी नी,
ज्ञान कित्थे पावां मैनूं समझ नहीं ॥
इस झोली विच हीरे मैं अगणित पाये,
ते गिन लगी मेरे हथ न आये।
पिछों पई पछतावा सईयो नी,
झोली फटी हुई मैनूं समझ नहीं ॥
जब झोली नूं मैं सिवन लागी,
आलस निद्रा आइ गई।
सुई न दिसदी धागा न लभदा,
तै मैं अज्ञानन रोए पई ॥
झोली ते मेरी फटी हुई — —
ज्ञान दा सुरमा ने सत्संगत चश्मा,
जीवन - ज्योति मैं पाइ लई।
मैं कमली ओदा मरम न जाना,
ते सच्चे दर्जी दी लोड़ पई।

झोली तां मेरी पापां दी भरी नी,
ज्ञान कित्थे पावां मैंनूं समझ नहीं ॥

हम तो तेरे मस्ताने हैं, जेर जेवर को क्या जानें ।
तेरी माया का रंग प्रभु भूले जीवों को सताता है ॥
हम रंग में तेरे रंगे हुए माया के रंग को क्या जाने ।
वेदोंका हमको ज्ञान नहीं, तू आता हमारे ध्यान नहीं ॥
जब समदर्शी है नाम तेरा,अपनेसे जुदा फिर क्या जाने ।
जो देह दृष्टि में रहते हैं वह तीन गुणों को कहते हैं ॥
मायाके रूप में रहते हैं वह निज स्वरूपको कहते हैं ।
हम आनन्द रसके भोगी हैं,नहीं जन्म-मरणके रोगी हैं ॥
हम केवल निश्चल योगी हैं कलयुग सतयुग हम क्या जाने ।
जिन निज स्वरूपको जाना है मायाकापता क्या पाना है ।
अहम ब्रह्म का ताना है हम भेदभावको क्या जाने ॥
जो नर पिया संग जाये बसे, चुड़ियोंके खेलको क्या जाने ।
हम पूरण सुखमें मस्त हुए, दुनियाकी खब रहम क्या जाने ॥



ऐ रोग अवलरा नी के जिस तन लगे सोई तन जाने,
जिनां नूं लग गई प्रेम बिमारी इसदी कोई करदाकारी,
लखा फेर सियाने नी के जिन तन लागे सोई तन जाने।
राम-नाम विच हुई दीवानी अठे पहर रवां नी मस्तानी,
इको राम पछाने नी के जिस तन लागे सोई तन जाने।
लटक जिन्हां नूं प्रेम दी लग गई,
सुध बुध सारे जग दी भुल गई।
जिन्हां प्रेम पछाना नी के जिन तन लागे सोई तन जाने॥

॥ भजन ॥

श्री राधे गोविन्दा गोपाला तेरा प्यारा नाम है।
गोपाला तेरा प्यारा नाम है।
नन्दलाला तेरा प्यारा नाम है॥
मोर मुकुट माथे तिलक बिराजे, गले वैजयन्ती माला।
कोई कहे वसुदेवकी नन्दन।
कोई कहे नन्दलाला॥
गोपाला तेरा प्यारा नाम है॥

श्री राधे गोविन्दा गोपाला तेरा प्यारा नाम है।

यमुना किनारे कृष्ण कन्हैया ।
मुरली मधुर बजावे ॥
ग्वाल-बाल के प्रेम कन्हैया ।
माखन मिसरी खावे ॥

श्री राधे गोविन्दा गोपाला तेरा प्यारा नाम है।

की होया जे जन्म लिया, ते कदर जन्म दा पाया न ।
परमेश्वर दी भक्ति वाला, उसते रंग चढ़ायो न ॥
भले जन का संग न कीता, वेद ज्ञान नूं पाया न ।
मूर्ख ने बेकली कीती, शरण तेरी जो आया न ॥
बिना चांग सी चोला तेरा, दागों दाग लगाया ई ।
दागनूं लोक ज्ञानदा साबुन, इक भी दाग मिटाया न ॥
की होया ...
काम - क्रोध - मद - लोभ - लुटेरे, तेरे पीछे लगे ने ।
पर तूं ऐसा गाफिल सुता पता इन्हां दा पाया न ।
की होया
ज्ञान – ध्यान कुछ करले प्रभुदा जे तूं पार उतरना ए।
न उस तों बेमुख होना, जन्म मरन विच मरना ए ॥
की होया

की होया जे जन्म लिये कदर जन्म दा पाया न।
फिर भटकता दर-दर मूर्ख खोज अन्दर दी कीती न ॥
प्रीतम तेरे अन्दर बैठा, तैनूं नजर आया न ॥
की होया जे जन्म लिया, जे कदर जन्म दा पाया न ॥

॥ भजन ॥

लगाकर अपने चरणों से न ठुकराते तो क्या होता।
चली जाती थी अपनी राह न भटकाते तो क्या होता ॥
तुम्हारे चरण कमलों में सदा मन को बसाया था।
तुम्हारी राह में इन भागी पलकों को बसाया था ॥
लगा कर लो तुम्हारे मैं सकल जग को भुलाया था।
चखाकर प्रेम रस प्रीतम न तरसाते तो क्या होता ॥
गुजारे दिन तड़पाते और गुजारी रातें सब रोके।
किया पाषाण-सा हृदय पड़ी सुद-बुध मैं सब खोके ॥
पुकारा लाख था तुमको रहे प्रतिमा – सी होके।
आते तुम यहां मुझको बुला लेते तो क्या होता ॥
नहीं कुछ भेद मैं समझी तेरी ज्योति की हे प्रीतम।
वही मैं गीत गाना चाहूं जो गाते हो तुम प्रीतम ॥

मुझे भी साथ ले जाओ कहां जाते हो तुम प्रीतम ।
यही बिनती है मेरी नित्य अपनाते तो क्या होता ॥

—:०:—

नीवा बने तो राम मिलेगा ।
नीवा होके चल के निवयां नूं रब मिलदा ।
नीवा बना ध्रुव भगत विचारा ।
पांच साल का था वो सारा ।
बन के इक असमानी तारा ॥
पाया राज अटल कि निवयां नूं रब मिलदा ॥
नीवे हुए प्रह्लाद भक्त से ।
जिसकी खातर तपे खम्ब से ॥
आये राम निकलके कि निवयां नूं रब मिलदा ॥
नीवी मीरा गोपाला ।
राणा भेजिया जहर प्याला ॥
हो गया अमृत जल । के निवयां नूं राम मिले ॥
दौलत पाकर नीवा रहना ।
सबसे रल-मिल निउकर चलना ॥
बड़ी यह मुश्किल गल कि निवयां नूं राम मिले ।

बकरा हर दम मैं-मैं करदा ।
कदे न नीवां बनके रहंदा ।।
ताहे उत्तरी खल कि निवयां नूं राम मिले ।।
जो नहीं बने नीवां प्यारा ।
जावे यमराज के द्वारा ।।
रोवें तलियां मल के ।
कि निवयां नूं रब मिलदा ।।
नीवां होके चल के निवियां नूं राम मिले ।।

जब जाग गया तो सोना क्या ।
प्रभु ने हीरा जन्म दिया था ।।
विषयों में इसको खोना क्या ।
काया का अपमान न करना ।।
माया का अभिमान न करना ।
काया मायाके चक्करमें जन्म अकारन खोना क्या
जब जाग गया तब सोना क्या ।
रूप जवानी गल जायगी ।।

मिट्टी में काया मिल जायगी ।
रूप सभी माटीमें मिलेंगे, काला गोवर सलोना क्या ॥
जब जाग गया तब सोना क्या ।
कोई किसी का मीत नहीं है ।
जग में सच्ची प्रीत नहीं है ।
झूठे प्रेम में फंस के दासी ।
अन्त समय पछताना क्या ॥

लगी रहे मेरे मन दी तार प्रभु नाल लगी रहे ।
तारां नाल जब तार मिल जाए,
भुल जावे संसार प्रभु नाल लगी रहे ।
मानव जन्म अमोलक हीरा मिले न बारम्बार ।
लगी रहे मेरे मन दी तार प्रभु नाल लगी रहे ॥
सत्संग दे विच अमृत वसदा,,
सत्संग सच्चा मार्ग दसदा ।
पीले अमृत धार प्रभु नाल लगी रहे,
तार दे नाल तार मिल जाए तो हो जाए बेड़ा पार ।
लगी रहे मेरे मन दी तार प्रभु नाल लगी रहे ॥

प्रेम दी जंजीर नाल सांवरे नूं बन्निए ।
सांवरे नूं बन्निए सांवरे नूं बन्निए ॥
पुछिए यशोदा माता कोलों दस माता हाल नी ।
किवे बन्ना शाम नूं मैं ओखली दे नाल नी ॥
ओसे ही तबीज नाल सांवरे नूं बन्निए ।
प्रेम दी जंजीर नाल सांवरे नूं बन्निए ॥
करिये प्रेम आस नाल गोपियां तों वध ।
यमुना तीर उत्ते सांवरे नूं बन्निए ॥ प्रेम—
आके सत्संग विच हरि गुन गान कर ।
सांवरे दी मूर्ति दा दिल विच ध्यान कर ॥
प्रेम वाली तार नाल सॉवरे नूं बन्निए ।
प्रेम वाली तार माई मीरा कोलों पूछिए ॥
पानी दी जंजीर नाल सांवरे नूं बन्निए ।
प्रेम दी जंजीर नाल सॉवरे नूं बन्निए ॥

जी मीरा के मन गोविन्द गोविन्द बसे,
मीरा के संग प्रभु चौपट खेलत ।
देख देख मीरा हंसे, जी मीरा के मन गोविन्द बसे ॥

खोल किवाड़ राना जी आया देख के गिरधर नसे ।
जी मीरा के मन गोविन्द बसे ॥
राणाने जानयां साथी है कोई जां संग मीरा तुम हसे ।
जी मीरा के मन गोविन्द बसे ॥
मीराने आखया तुम नहीं जानत एक मोहन मन बसे ॥
जी मीरा के मन गोविन्द बसे ॥
जहर प्याला राणा ने भेजा अमृत हो मीरा दिसे ।
जी मीरा के मन गोविन्द बसे ॥
पी प्याला मीरा होई मतवाली छिन रोवे छिन हसे ।
जी मीरा के मन गोविन्द बसे ॥
डिबियामें काला नाग जो भेजा सालगराम मीरा दिसे ।
जी मीरा के मन गोविन्द बसे ॥
इक मैं न बसी क्या भया सजनी कोल कुटुम्ब शुभ बसे ।
जी मीरा के मन गोविन्द बसे ॥

॥ भजन ॥

मेरा दिल चरण में लगा ले ।
मैं होर कुछ मंगदी नहीं ॥
मैनूं नाम दा प्याला पिला दे मैं होर कुछ मंगदी नहीं ।

माया दे जाल विच मैनूं न पाई ।
दासी हां तेरी प्रभु न ठुकराई ॥
मैनूं दर दी जोगन बना ले मैं होर कुछ मंगदी नहीं।
मेरा चित चरणांसे लगा ले मैं होर कुछ मंगदी नहीं।
मैनूं दर दी जोगन बना ले, मैं होर कुछ मंगदी नहीं ॥
माया दा जाल बिछाया ।
मैनूं न ओदे विच भरमाया ॥
मैनूं मायादे जाल तों बचा ले, मैं होर कुछ मंगदा नहीं।
जग दे ताने बहुत सहारे ।
मैंनूं आके दर्श दिखा जा मैं होर कुछ मंगदी नहीं।
मेरा चित चरनां ते लगा ले मैं होर कुछ मंगदी नहीं ॥

प्रेम डोर में बांधी बंधन टूटे न डोरी है गहरे रंग की।
छाप लगी इस पर सत्संग की रही न कोई व्याधि ॥
बन्धन टूटे न ये डोरी गहरे गहरे रंग की ॥
मोरे पियाकी रीत निराली, समझ नआये उसकी आली ।
काटी सकल उपाधि बन्धन टूटे न ... ... ॥
हरिने मुझको आन सम्भाला मनमंदिरमें किया उजाला।
लागी सहज समाधि बन्धन टूटे न ... ... ॥

रोम रोम में हरी समाए जोत बन नैनन में धाए ।
यहीसाधना साधी बन्धन टूटे न ये डोरी गहरे रंगकी ॥

—※※—

रख सुरती नूं अंदर करके ।
रख बिरती नूं अंदर करके ॥
तेरा हो जाए बेड़ा पार वे रख सुरती नूं अंदर करके ॥
तेरा हृदय सिहासन धरिया ।
जीयो हीरे मोती जड़या ॥
ओथे हरियां दा व्यापार वे रख सुरती नूं अंदर करके ॥
तेरे अंदर बंसरी बजदी ।
जीओ बजदी ते प्यारी लगदी ॥
तेरे अंदर कृष्ण मुरार वे, रख मुरती नूं अंदर करके ॥
ते अंदर ब्रह्मा विष्णु ।
तूं बन-बन ढूढ़े किस नूं ॥
तेरे दिल विच जीत अपार वे, रख सुरती अँदर करके ॥

—★★—

* होली का भजन *

卐

आओ श्याम जी तेरे ते रंग पावां ।
होली वाला बदला मैं आज लावां ॥

भर पिचकारी मारीयां ।
रज – रज दर्शन अज पावां ।
होली वाला बदला मैं अज लावां ॥

तू मेरा बनवारी ए ।
तू मेरा गिरधारी ए ।
चरणों में तेरे सीस नवावां ।
होली वाला बदला मैं अज लावां ॥

ठुमक ठुमक पिया अज आना ए ।
सब सखियां मन भौणा ए ॥
गल में फुल्लां दे हार पावां ।
होली वाला बदला मैं अज लावां ॥

सखियां संग घर जाना विच ए ।
लुट – लुट माखन खाना ए ॥

माखन मिश्री दा भोग लावां ।
होली वाला बदला मैं अज लावां ॥
आओ शाम जी तेरे ते रंग पावां ।
होली वाला बदला मैं अज लावां ॥

॥ ੴ सतुगुरु प्रसादि ॥

सलोक महला १

गुरु गोविन्द गाइओ नहीं जनम अकारथ कीन ।
कहु नानक हरि भजु मना जिह विधि जलको मीन ॥
बिखिअन सिउ काहे रचिओ निमिख न होइ उदास ।
कहु नानक हरि भजु मना परै न जम की फास ॥
तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति ।
कहु नानक हरि भजु मना अउध जात है बीति ॥
बिरध भइओ सूझै नहीं कालु पहुँचिओ आन ।
कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवान ॥
धनु दारा सम्पति सगल जिमि अपनु करि मानि ।
इन में कछु संगी नहीं नानक सांची जानि ॥

पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ।
कहु नानक तिह जानिए सदा वसतु तुम साथ ॥
तनु धनु जिह तो कउ दीओ ता सिउ नेह न कीन ।
कहु नानक नर बावरे अब किउ डोलत दीन ।

तनु धनु संपै सुख दीओ अरु जिह नीके धाम ।
कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न नाम ॥
सब सुख दाता राम है दूसर नाहिं न कोइ ।
कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइ ॥

जिह सिमरत गति पाइ ये तिहि भजु रे तै मीत ।
कहु नानक सुन रे मना अउध घटत है नीत ॥
पांच तत्व को तनु रच्यो जानहु चतुर सुजान ।
जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि में मान ॥

घटि-घटि में हरि जो बसै संतन कहिओ पुकार ।
कहु नानक तिह भजु मना भउनिधि उतरहिं पार ॥
सुख दुख जिह परसै नहीं लोभ मोह अभिमान ।
कहु नानक सुन रे मना सो मूरति भगवान ॥
उसतति निंदिया नाहिं जिह कंचन लोह समान ।
कहु नानक सुन रे मना मुक्ति ताहि ते जान ॥

हरष रोम जाकै नहीं बैरी मीत समान ।
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि ते जान ॥
भै काहू कब देत नहीं नहिं भै मानत ग्रानि ।
कहु नानक सुनि रे मना गिग्रानी ताहि बखानि ॥
जिहि विखिग्रा सगली तजी लीग्रो भेख बैराग ।
कहु नानक सुनि रे मना तिह नर माथै भाग ॥
जिह माइग्रा ममता तजी सभ ते भइग्रो उदास ।
कहु नानक सुनि रे मना तिह घटि ब्रह्म निवास ॥
जिहि प्रानी हउ मै तजी करता राम पछान ।
कहु नानक बहु मुकति नरु इह मन साची मान ॥
भै नासन दुरमति हरन कलि में हरि को नाम ।
निस दिन जो नानक भजै सफल होहि तिहि काम ॥
जिह्वा गुन गोविन्द भजु करन सुनहु हरि नाम ।
कहु नानक सुन रे मना परहिं न जम के धाम ।
जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह ग्रहंकार ।
कहु नानक ग्रापन तरै ग्रउरन लेत उधार ॥
जिउ सुपना ग्ररु पेखना ऐसे जग कउ जानि ।
इन में कछु साचो नहीं नानक बिन भगवान ॥
निसि दिनि माइया कारने प्रानी डोलत नीत ।
कोटन मैं नानक कोऊ नारायन जिह चीति ॥

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ।
जग रचना तैसे रची कहु नानक सुन मीत ॥

प्रानी कछू न चेतई मदमाइआ के अन्ध ।
कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फन्ध ॥

जो सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ।
कहु नानक सुन रे मना दुरलभ मानुख देह ॥

माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ।
कहू नानक बिनु हरि भजनि बिरथा जनमु सिरान ॥

जो प्रानी निसि दिन भजै रूप राम तिह जानु ।
हरि जन हरि अन्तर नहीं नानक साची मानु ॥

मनु माइआमें फंसि रहिओ बिसरिओ गोविन्द नाम ।
कहु नानक बिनु हरि भजन जीवन कउने काम ॥

सुख में बहु संगी भये दुख में संगी न कोइ ।
कहू नानक हरि भजु मना अन्त सहाई होइ ॥

जनम जनम भरमत फिरिओ मिटिओ न जमको त्रासु ।
कहू नानक हरि भजु मना निरभै पावहिं वासु ॥

जतन बहुत मैं करि रहिओ मिटिओ न मन को मान ।
दुरमति सिउ नानक फधिओ राखि लेउ भगवान ॥

बाल जुआनि अरु बिरध पुनि तीनि अवस्था जानि ।
कहू नानक हरि भजन बिनु बिरथा सब ही मान ॥
करणो हुतो सुना किओ परिओ लोभ कै फंध ।
नानक समिओ रमि गइओ अब किउ रोवत अंध ॥
मनु माइआ में रमि रहिओ निकसत नाहिनि मीत ।
नानक मूरति चित्र जिउ छाड़ित नाहनि भीत ॥
नर चाहत कछु और अउरै की अउरै भई ।
चितवत रहिओ ठौर नानक फासी गलि परी ॥
जतन बहुत सुख के किये दुख को कियो न कोइ ।
कहू नानक सुन रे मना हरि भावै सो होइ ॥
जगत भिखारी फिरत है सब को दाता राम ।
कहू नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥
झूठै मान कहा करै जगु सुपने जिउ जान ।
इस मै कछु तेरो नहीं नानक कहिओ बखान ॥
गरब करत है देह को बिनसै छिन मै मीति ।
जिहि प्रानी हरि जसु कहिओ नानक तिहि जगु जीति ॥
जिहि घटि सिमरन राम को सो नर मुकता जानु ।
जिहि नर हरि अंतरु नहीं नानक साची मानु ॥
एक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मन ।
जैसे सूकरु सुआन नानक मानो ताहि तन ॥

सुग्रामी को गृह जिउ सदा सुग्रान तजत नित्त ।
नानक इह विधि हरि भजउ इक मन होइ इक चित्त ॥
तीरथ बरत ग्ररु दान करि मन मै धरै गुमान ।
नानक निहफल जात तिह जिउ कूकर इसनान ॥
सिर कंपिग्रो पग डगमगे नैन जोति ते हीन ।
कहु नानक इह विधि भई तऊ न हरि रस लीन ॥
निज करि देखिग्रो जगत में को काहू को नाहिं ।
नानक थिर हरि भगति है तिह राखो मन माहिं ॥
जग रचना सब झूठ है जानि लेहू रे मीत ।
कह नानक थिर ना रहै जिउ बालू की भीत ॥
राम गइग्रो रावन गइग्रो जाकउ बहु परिवार ।
कहु नानक थिर कछु नहीं सुपने जिउ संसार ॥
चिंता ताकी कीजिये जो ग्रनहोनी होइ ।
इह मारग संसार को नानक थिर नहीं कोइ ॥
जो उपजिग्रो सो बिनसि है परो ग्राज के काल ।
नानक हरि गुरण गाइ ले छाड़ि सगल जंजाल ॥
दोहरा बलु छुटकिग्रो बंधन परे कछू न होत उपाइ ।
कहु नानक ग्रब ग्रोट हरि गजि जिउ होहु सहाइ ॥
बलु होग्रा बंधन छुटे सब कछु होत उपाय ।
नानक ग्रब कछु तुमरै हाथ में तुम ही होत सहाय ॥

संग सखा सब तजि गये कोउ न निबहिओ साथ ।
कहु नानक इह विपत में टेक एक रघुनाथ ॥
प्रभु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोविन्द ।
कहु नानक इह जगत में किन जपिओ गुरुमंत ॥
राम नाम उरि में गहिओ जाके सम नहिं कोइ ।
जिह सिमरत संकट मिटै दरस तुम्हारो होइ ॥

* अष्ट-पदी *

ब्रह्म गिआनी सदा निर्लेप,
जैसे जल महि कमल अलेप ।
ब्रह्म गिआनी सदा निर्दोष,
जैसे सूर सरब कउ सोख ॥
ब्रह्म गिआनी कै दृष्टि समानि,
जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पावन ।
ब्रह्म गिआनी कै धीरजु एक,
जिउ वसुधा कउ खोदे कोऊ चंदन लेप ॥

ब्रह्म गिआनी का इहै गुनाउ,
नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥
ब्रह्म गिआनी निरमल ते निरमला,
जैसे मैल न लागै जला ॥
ब्रह्म गिआनी कै मनि होइ प्रकासु,
जैसे धर ऊपरि आकासु ।
ब्रह्म गिआनी कै मित्र शत्रु समानि,
ब्रह्म गिआनी के नाहीं अभिमान ॥
ब्रह्म गिआनी उच्च ते ऊंचा,
मन अपनै है सब ते नीचा ।
ब्रह्म गिआनी से जन भए,
नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥
ब्रह्म गिआनी सकल की रीना,
आतम रस ब्रह्म गिआनी चीना ।
ब्रह्म गिआनी की सब ऊपरि मइआ,
ब्रह्म गिआनी ते कछु बुरा न भइया ॥
ब्रह्म गिआनी सदा समदरसी,
ब्रह्म गिआनी की दृष्टि अमृत बरसी ।

ब्रह्म गिआनी बंधन ते मुक्ता,
ब्रह्म गिआनी की निरमल जुगता ॥
ब्रह्म गिआनी का भोजन गिआन।
नानक ब्रह्म गिआनी का ब्रह्म धिआन ॥
ब्रह्म गिआनी एक ऊपरि आस,
ब्रह्म गिआनी का नहीं बिनास ॥
ब्रह्म गिआनी के गरीबी समाहा,
ब्रह्म गिआनी पर उपकार उमाहा ।
ब्रह्म गिआनी कै नाहीं धंधा,
ब्रह्म गिआनी ले धावत बंधा ॥
ब्रह्म गिआनी के होई सु भला,
ब्रह्म गिआनी सुफल फला ।
ब्रह्म गिआनी संग सगल उधारु,
नानक ब्रह्म गिआनी जपै सगल संसारू ॥
ब्रह्म गिआनी कै एकै रंगा,
ब्रह्म गिआनी के बसै प्रभु संगा ।
ब्रह्म गिआनी कै नाम अधारु,
ब्रह्म गिआनी कै नाम परिवारु ॥

ब्रह्म गिआनी सदा सद जागत,
ब्रह्म गिआनी अहं बुद्धि तिआगत।
ब्रह्म गिआनी कै मनि परमानन्द,
ब्रह्म गिआनी कै धरि सदा अनन्द॥
ब्रह्म गिआनी सुख सहज निवास,
नानक ब्रह्म गिआनी का नहीं बिनास॥
ब्रह्म गिआनी ब्रह्म का बेत्ता,
ब्रह्म गिआनी एक संगि हेता।
ब्रह्म गिआनो कै होइ अचिंत,
ब्रह्म गिआनी का निरमल मंत॥
ब्रह्म गिआनी जिसु करै प्रभु सापि,
ब्रह्म गिआनी का बड़ प्रताप॥
ब्रह्म गिआनीका दरसु बड़ भागी पाइए,
ब्रह्म गिआनी कइ बलि बलि जाइए।
ब्रह्म गिआनी कउ खोजहि महेसुर,
नानक ब्रह्म गिआनी आपि परमेसुर॥
ब्रह्म गिआनी की कीमत नाहीं,
ब्रह्म गिआनी कै सगल मनमाहीं।

ब्रह्म गिआनी का कौन जानै भेदु,
ब्रह्म गिआनी कौउ सदा उपदेश ॥
ब्रह्म गिआनीका कथिआ न जाई अधाख्यर,
ब्रह्म गिआनी सरब का ठाकुर ।
ब्रह्म गिआनी की मिति कउनु बखानै,
ब्रह्म गिआनीकी गति ब्रह्म गिआनी जानै ॥
ब्रह्म गिआनी का अन्त न पारू,
नानक ब्रह्म गिआनी कउ सदा नमसकारू ।
ब्रह्म गिआनी सब सृष्टि का करता,
ब्रह्म गिआनी सदा जीवे नहीं मरता ॥
ब्रह्म गिआनी मुक्ति जगत जीवका दाता,
ब्रह्म गिआनी पूरन पुरखु विधाता ।
ब्रह्म गिआनी अनाथ का नाथु,
ब्रह्म गिआनी का सब ऊपरि हाथु ॥
ब्रह्म गिआनी का सकल अकारु,
ब्रह्म गिआनी आपि निरंकारु ।
ब्रह्मगिआनीकी सोभा ब्रह्मगिआनी बनी,
नानक ब्रह्म गिआनी सरब का धनी ॥

॥ श्लोक ॥

उर धारै जो अन्तरि नामु,
सरब मै पेखै भगवानु ।
निमख-निमख ठाकुर नमस्कारै,
नानक ओहु अपरस सगल निसतारै ॥

ओम सतगुरु प्रसादि

आदि गुरुए नमह, आदि गुरु ए नमह ।
सत गुरुए नमह, श्री गुरुदेवए नमह ॥

॥ अष्ट-पदी ॥

सिमरउ सिमरि सिमरि सुख पावउ ।
कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥
सिमरउ जासु बिसुम्भर एकै ।
नाम जपत अगनित अनेकै ॥
वेद - पुरान सिमृति सुधाख्यर ।
कीने राम - नाम इक आख्यर ॥

किनका एक जिस जीव बसावै ।
ताकी महिमा गनी न जावै ॥
आंखी एकै दरस तुहारो ।
नानक उन संगि मोहि उधारो ॥
सुखमनि सुख अमृत प्रभु नामु ।
भगत जना कै मनि बिश्रांमु ॥
प्रभु कै सिमरन गरभ न बसै ।
प्रभु कै सिमरन दुख जम नसै ॥
प्रभु कै सिमरन काल परिहरै ।
प्रभु कै सिमरन दुसमन टरै ॥
प्रभु के सिमरन कछु बिघन न लागै ।
प्रभु के सिमरन अन दिन दिनु जागै ॥
प्रभु कै सिमरन भव न बिआपै ।
प्रभु कै सिमरन दुख न सतापै ॥
प्रभु कै सिमरन साध कै संगी ।
सरब निधान नानक रंगी ॥
प्रभु कै सिमरन रिधि सिधि नउ निधि ।
प्रभु कै सिमरन गिआन ततुबिधि ॥

प्रभु कै सिमरन जप तप पूजा ।
प्रभु कै सिमरन बिनसै दूजा ॥
प्रभु कै सिमरन तीरथ इसनानी ।
प्रभु कै सिमरन दरगह मानी ॥
प्रभु कै सिमरन होई सु भला ।
प्रभु कै सिमरन सुफल फला ॥
से सिमरही जिन आपि सिमराए ।
नानक ताकै लागउ पाए ॥
प्रभु का सिमरन सब ते ऊंचा ।
प्रभु कै सिमरन उधरे मूचा ॥
प्रभु कै सिमरन तृसना बूझै ।
प्रभु कै सिमरन सब कुछ सूझै ॥
प्रभु कै सिमरन नाहिं जम त्रासा ।
प्रभु कै सिमरन पूरन आसा ॥
प्रभु कै सिमरन मन की मलु जाई ।
अमृत नाम रिद माहि समाई ॥
प्रभु जी बसहिं साध की रसना ।
नानक जन का दासनि दसना ॥

प्रभु को सिमरहि से धनवंते ।
प्रभु को सिमरहि से पतिवंते ॥

प्रभु को सिमरहि से जन परवान ।
प्रभु को सिमरहि से पुरख प्रधान ॥

प्रभु को सिमरहि से बेमुहताजे ।
प्रभु को सिमरहि से सरब के राजे ॥

प्रभु को सिमरहि से सुखवासी ।
प्रभु को सिमरहि सदा अविनासी ॥

सिमरन ते लागे जिन आपि दईआला ।
नानक जन की मंगै खाला ॥

प्रभु को सिमरहि से पर उपकारी ।
प्रभु को सिमरहि तिन सब बलिहारी ॥

प्रभु को सिमरहि से सुख सुहावै ।
प्रभु को सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥

प्रभु को सिमरहि तिन आतम जीता ।
प्रभुको सिमरहि तिन निरमल रीता ॥

प्रभु को सिमरहि तिन अनन्द घनेरे ।
प्रभु को सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥
संत कृपा ते अन दिनु जागी ।
नानक सिमरन पूरै भागी ॥

प्रभु कै सिमरन कारज पूरे ।
प्रभु कै सिमरन कबहू न झूरे ॥
प्रभु कै सिमरन हरि गुन बानी ।
प्रभु कै सिमरन सहज समानी ॥
प्रभु कै सिमरन निहचल आसन ।
प्रभु कै सिमरन काम बिगासन ॥
प्रभु कै सिमरन अनहद झुनकार ।
प्रभु सिमरन का अन्त न पार ॥
सिमरहि से जन को प्रभु भइआ ।
नानक तिन जन सरनी पइया ॥
हरि सिमरन करि भगत प्रगटाए ।
हरि सिमरन लगि वेद उपाए ॥

हरि सिमरन भए सिध जती दाते ।
हरि सिमरन नींच चहुंकुट जाते ॥
हरि सिमरन धारी सब धरना ।
सिमर सिमर हरि कारन करना ॥
हरि सिमरन कियो सगल अकारा ।
हरि सिमरन आपि निरंकारा ॥
करि कृपा जिस आपि बुझाइआ ।
नानक गुरुमुख हरि सिमरन तिन पाइआ ॥

॥ श्लोक ॥

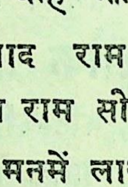
दीन दरद दुख भंजना, घटि-घटि नाथ अनाथ ।
शरण तुम्हारी आइयो, नानक के प्रभु साथ ॥

॥ भजन ॥

★

सीता राम सीता राम सीता राम कहिए ।
जाही विध राखे राम ताही विध रहिए ॥
राम नाम होंठ पे हो राम काज हाथ में ।
कैसे तू अकेला वे राम तेरे साथ में ॥

विधि का विधान मान हानि लाभ सही है ।
सीता राम सीता राम सीता राम कहिए ९
किया अभिमान तेरा मान कम हो गया ।
होगा अन्त वही जो राम हुकम हो गया ।।
फलकी आशा त्याग जाग कर्म करना चहिए ।
सीता राम सीता राम सीता राम कहिए ।।
दीनानाथ हाथ सौंप जिन्दगी की डोर दे ।
महलों में राखे चाहे झोपड़ी में ठोर दे ।।
धन्यवाद निर्विवाद राम – राम कहिए ।
सीता राम सीता राम सीता राम कहिए ।।
आशा एक राख मनमें लाख आश छोड़ दे ।
नाता एक सांचा प्रभुका लाख नाता तोड़ दे ।।
निर्विवाद राम रंग अंग अंग गइये ।
सीता राम सीता राम सीता राम कहिए ।।



-: कीर्तन :-

जय सिया राम जय जय सिया राम ।
जय सिया राम जय जय सिया राम ।।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।।
श्रीमन नारायण नारायण नारायण ।
भज मन नारायण नारायण नारायण ।।
श्री कृष्ण चैतन्य प्रभु नित्य नन्दा ।
हरे कृष्ण हरे राम राधे गोविन्दा ।।
हरि हरि बोलो गोविन्द हरि बोलो ।
गोविन्द हरि बोलो गोपाल हरि बोलो ।।
हरि हरि बोल हरि हरि बोल ।
केशव माधव गोविन्द बोल ।।
गोविन्द जय जय गोपाल जय जय ।
राधा रमण हरि गोविन्द जय जय ।।

जय राधे जय राधे गोपाल भज मन श्री राधे ।
श्रीराधे जय राधे जय राधे गोपाल श्री राधे ॥
राधा रानी की जय महारानी की जय ।
बोलो बरसाने वारी की जय जय जय ॥
बोलो भान दुलारी की जय जय जय ॥
गोविन्द जय जय गोपाल जय जय ।
गो गंगा गीता गायत्री जी की जय जय ॥

बधाई

रिम झिम रिम झिम गोपियां ने बधाई ए ।
आये ने गोपाल अज्ज सब नूं बधाई ए ॥
भादों दी काली रात, शाम मेरे आये ने ।
व्रज दियां गोपियां दे, भाग सवाए ने ॥
फूलां भरी वर्षा ने रिम झिम लाई ए ।
आये ने गोपाल अज्ज सब नूं बधाई ए ॥
निका जेआ शाम मेरा, अज्ज घर आया ए ।
व्रज दियां गोपियां ने, व्रज नूं सजाया ए ॥

यमुना दे कण्डे उते, रास रचाई ए ।
आये नें गोपाल अज्ज सब नूं बधाई ए ॥
निका जेहा शाम वाले, हंसदा ते रोवंदा ।
ब्रज दीयां गोपियां दे, मन नूं चुरावंदा ॥
यशोदा मैया नूं प्रेम लीला दिखाई ए ।
आये ने गोपाल अज्ज सब नूं बधाई ए ॥

* होली का भजन *

卐

मेरा होरी खेले सांवरिया मैं होली खेलन जाना ।
नन्द गांव का सोहना मन्दिर निकले श्याम मुरारी ॥
बरसाने दी गलियां विच आ गई राधा प्यारी ।
शाम सुन्दर ने केश रंग दी भरी जदों पिचकारी ॥
लालों लाल होआ सब मंडल, दुनियां रंगी सारी ।
केसर ते अम्बर क्योरा जमना विच मिलाया ॥
जमना जी ने होरी कारण देखो रंग बटाया ।
कुञ्ज गली विच सखियों ने जद अपना आप लुकाया ।
प्रेम रंग दी चढ़ी खुमारी मोहन फाग मचाया ॥

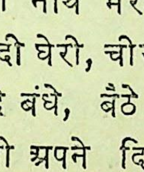
किस्मत मेरी होवे चंगी, मैं भी दर्शन पावां ।
प्रेम रंग हथां विच लैके शाम दे मुंह ते लावां ।।
हत्थ छुड़ावे बांह पकड़ां अपना जोर लगावां ।
प्रेम डोर विच बन के मोहन घर अपने ले जावां ।।
रज रज दर्शन पावां जीवन सफल बनावां ।
दासी ओदी मस्तां अन्दर नच नच के मैं गावां ।।

* होली *

होली खेलो मेरी बहनों सत गुरु दे संग ।
मोह माया दे कपड़े लाह के हो जाओ मलंग ।
होली खेलो मेरी बहनों सतगुरु दे संग ।।
ज्ञान भक्तिके रंगमें सतगुरु रंग देंगे तन-मन ।
होली खेलो मेरी बहनों सत गुरु दे संग ।।
विवेक विराग दी ली पिचकारी प्रेम दा भर
लो रंग ।
ममता के हाथों से फड़कर खेलो गुरु के संग ।।

तन-मन अपना भेंट चढ़ा दी सीस रखो चरनन ।
ऐसा समय नित २ आये मिलके करो सत्संग ॥
होली खेलो मेरी बहनों सतगुरु के संग ॥

जो बिगड़े सो तेरा नाथ मेरा क्या बिगड़े ।
असी हैं नौकर तू है मालक ॥
सब दुनियां दा तू प्रति पालक ।
बाकी झूठ बखेड़ा नाथ मेरा क्या बिगड़े ॥
विच सभा दे द्रोपदी घेरी, चीर दुशासन लाये ।
पंजे पांडव धर्म दे बंधे, बैठे शीश झुकाये ॥
दुर्योधन अभिमानी अपने दिल विच खुशियां मनाये ।
हां निराश निभानी अबला तैनूं अर्ज सुनाये ॥
नाथ मेरा क्या बिगड़े जो बिगड़े सो तेरा ॥



-: माता की भेंट :-

★

आजा वैष्णो शेर ते सवार होके आजा ।
जोत जगावां तेरी काहनू करनी है देरी ॥
छाई रात अन्धेरी दे दर्शन इक बारी ॥
आजा वैष्णो शेर ते सवार होके आजा ॥
तू है बगयां शेरां वाली, पापी दुष्ट मिटाने वाली ।
तू है मात मैं हां बाल, मैनूं लाले चरणां नाली ॥
आजा वैष्णो शेर ते सवार होके आजा ॥
भवन तेरे दी शोभा न्यारी दूरों चल २ आन पुजारी ।
मेरा दिल है रहा, दस्ती हुन भी बुआ खोल ॥
आजा वैष्णो शेर ते सवार होके आजा ॥
आए नराते तूं न आए, रल मिल भक्तां जोत जगाई ।
मैनूं मंग देवें वरदान, मैनूं दे भक्ति दा दान ॥
आजा वैष्णो शेर ते सवार होके आजा ॥
मां पुतरां दे झगड़े काहदे, तूं मेरे नाल कीते सी वायदे ।
काहे तूं भुलियां करार जेहड़ा कीता सी इकवार ॥
आजा वैष्णो शेर ते सवार होके आजा ॥

जोतां वालिए महारानिए,
अपने भक्तां दी सुनले पुकार मां
दूर२ तों संगतां आइयां तेरे पहाड़ियां,
चढ़के चढ़ाइयां भेटां तेरियां नाल ले आइयां ॥
तेरे ही दर्श दियां मस्तियां छाइयां,
जोतां वालिए महारानिए ... ... ।
दुखियां दे दुख दूर करे तूं ।
खालियां झोलियां आप भरे तूं ॥
सब विपत्तियां आन हरे तूं ।
पापियां ते बन बिजली गिरे तूं ॥
जोतां वालिए महारानिए,
अपने भक्तां दी सुनले पुकार मां ।

तेरे चरणां दे विच बान गंग वग
नाल जोत जगे शेरां वालिए
जय हो शेरां वालिए
जय हो लाटां वालिए
जय हो जोतां वालिए
तेरे चोले नूं लगी ए किनारी हां किनारी

तैनूं पुजदी दुनियां सारी हां सारी
तेरे चरणां दे विच वान गंग वगे
नाल जोत जगे शेरां वालिए। जय हो...
तेरे चोले नूं लगे नें पतासे हां पतासे
तैनूं पुजदे नें जम्मू वाले राजे हाँ राजे
शेराँ वालिए जय हो शेराँ वालिए। तेरे...
राजा अकबर नहर ले आया
तेरियाँ जोताँ ते पानी पाया हाँ पाया
जोत जगमग जगे पानी थर-थर कम्पे
शेराँ वालिए जय हो शेराँ वालिए
जय हो लाटाँ वालिए ॥

तेरे चरणाँ दा चरणामृत मंग के पीना नहीं।
माँ मंग के पीना नहीं, दाती मंग के पीना नहीं॥
दाती आप देवें ताँ पीवाँ, मंग के पीना नहीं।
हाँ मंग के पीना नहीं; तेरे चरणाँ दा अमृत ... ॥
असी गुजारा करना दाती पीके प्रेम प्याला।
होराँ नालों दाती मेरा पीन दा ढंग निराला॥

मा शरणी तेरी आ गया खाली कदी न जावां ।
मंग के पीना नहीं तेरे चरणां दा चरणामृत ··· —

पहली बारी दाती मैनूं दित्ता बड़ा दिलासा ।
हुन चाहे तूं भीख मंगा ले हथ विच फड़ के प्याला ॥

मा आप देवे तां दुध बराबर ।
मंग के पीवां पांनी, मग के पोना नहीं तेरे···॥

मां चाहे तूं मैनूं धक्के मारे, छड़ना नहीं दरवाजा ।
आप कहेगी ले पकड़ पीले, आप मारेगी आवाजां ॥

मां तू वी जिद दी पक्की है ते मैं जिद दा पक्का ।
तेरे चरणां दा चरणामृत मंग के पीना नहीं ॥



श्री राम जी की आरती

❀ ❀ ❀ ❀

हे रघुवर तेरी आरती गाऊं ।
आरती गाऊं प्रभु तुम को रिझाऊं ॥
शीश पे रघुवर मुकुट विराजे ।
गले वैजन्ती माला साजे ॥
चरणों में तेरे फूल चढ़ाऊं ।
हे रघुबर तेरी आरती गाऊं ॥
बाएें सोहित जग जननी ।
चरणन चापत है सुत अन्जनी ॥
मैं भी सियावर तेरा दास कहाऊं ।
हे रघुवर तेरी आरती गाऊं ॥
लखन लाल जी विराजे दाएं ।
भरत शत्रुघ्न चंवर डुलाएं ॥
मैं बलिहारी तिहारे जाऊं ।
हे रघुवर तेरी आरती गाऊं ॥

सर्व जनों के आप हैं रक्षक ।
दूर करो दुख हे जग पालक ॥
चरणों में तेरे शीश नवाऊं ।
हे रघुवर तेरी आरती गाऊं ॥

—★★—

श्री कृष्ण हरे श्री कृष्ण हरे ।
दुखियोंके दुख दूर करे जय २ श्री कृष्ण हरे ।
जब चारों तरफ अन्धियारा हो, ।
आशा का दूर किनारा हो ।
और कोई न खेवन हारा हो फिर तू ही बेड़ा पार करे ।
जय २ श्री कृष्ण हरे, श्री कृष्ण हरे ।
तू चाहे तो सब कुछ करदे विषको अमृत करदे ।
पूरन करदेयो उसकी आशा जो भी तेरा ध्यान धरे ।
जय श्री कृष्ण हरे श्री कृष्ण हरे ॥

—o ❀ o—

सदगुरुदेव की आरती

ओम जै गुरुदेव हरे, ओम जै गुरुदेव हरे।
भक्त जनों के संकट पल में दूर करे ॥ ओम०
जय गुरुदेव दयानिधि, दीनन हितकारी।
जय-जय मोह विनाशक भव बन्धन हारी ॥ ओम०
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, गुरु मूरति धारी।
वेद पुराण बखानत गुरु महिमा भारी ॥ ओम०
जप तप तीरथ संयम, दान विविध दीनें।
गुरु बिनु ज्ञान न होवे, कोटि यतन कीने ॥ ओम०
माया मोह, नदी जल, जीव बहे सारे।
नाम जहाज, बिठा कर, गुरु पल में तारे ॥ ओम०
काम क्रोध मद मत्सर, चोर बड़े भारे।
ज्ञान खड्ग ले कर में, गुरू सब संहारे ॥ ओम०
नाना पंथ जगत में, निज-निज गुण गावैं।
सब का सार बताकर गुरू ज्ञान लावैं ॥ ओम०
गुरुचरणामृत निर्मल सब पातक हारी।
बचन सुनत तम नासे, सब संशय हारी ॥ ओम०
तन मन धन सब अर्पण गुरु चरणन कीजै।
'ब्रह्मानन्द' परमपद, मोक्ष गती लीजै ॥ ओम०

आरती

ओम जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ।। ओम०
जो ध्यावे फल पावे दुख बिन से मनका ।
सुख-सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तन का ।। ओम०
मात-पिता तुम मेरे, शरण पड़ूं किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी ।। ओम०
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।। ओम०
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता ।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती ।
किस विध मिलूं दयामय, तुम को मैं कुमती ।। ओम०
दीन - बन्धु दुःख हर्ता तुम रक्षक मेरे ।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ।। ओम०
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ।। ओम०

—※—

—: प्रार्थना :—

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हार हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में ॥
मेरा निश्चय बस एक यही इक बार तुम्हें पा जाऊं मैं ।
अर्पण कर दूं दुनियां भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में ॥
जो जगमें रहूं तो ऐसे रहूं ज्यों जलमें कमलका पात रहे ।
मेरे सब गुण दोष समर्पित हों, गोपाल तुहारे हाथों में ॥
यदि मानुष का मुझे जन्म मिले, तो तव चरणों का पुजारी बनूं ।
इस पूजक की इक-इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में ॥
जब-जब संसार का कैदी बनूं, निष्काम भावसे कर्म करूं ।
फिर अन्त समयमें प्राण तजूं निराकार साकार तुम्हारे हाथों में ॥
मुझ में तुझ में बस भेद यही, मैं नर हूं आप नारायण हैं ।
मैं हूं संसार के हाथों संसार तुम्हारे हाथों में ॥
अब सौप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में ॥

—: गायत्री मन्त्र :—

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो-
देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥

ॐ श्री परमात्मने नमः ।

भाव के भूखे भगवान

भाव का भूखा हूं मैं, और भाव ही बस सार है ।
भाव से मुझको भजे, तो भव से बेड़ा पार है ॥

अन्न धन अरु वस्त्र भूषण, कुछ न मुझको चाहिए ।
आप हो जावे जो मेरा, बस पूर्ण यह सत्कार है ॥

भाव बिन सब कुछ भी दे डाले तो मैं लेता नहीं ।
भाव से इक फूल भी, दे तो मुझे स्वीकार है ॥

भाव बिन सूनी पुकारें, मैं कभी सुनता नहीं ।
भाव पूरित टेर ही, करती मुझे लाचार है ॥

भाव जिस जन में नहीं, उसकी मुझे चिन्ता नहीं ।
भाव वाले भक्त का, भरपूर मुझ पर भार है ॥

जो मुझी में भाव रखकर, लेते हैं मेरी शरण ।
उसके और मेरे हृदय में, एक रहता तार है ॥

बांध लेते हैं मुझे यों, भक्त दृढ़ जंजीर में ।
इसलिये इस भूमि पर, होता मेरा अवतार है ॥

※ गायत्री महिमा ※

गायन्तं त्रायते यस्माद् गायत्री तेन प्रोच्यते ।

अर्थ—गायन करने वाले को संसार सागर से तार देती है इसलिये इसका नाम गायत्री है ।

गायत्री वेद जननी, गायत्री पाप नाशिनी ।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम् ॥

अर्थ—गायत्री वेद की माता है, गायत्री पाप नष्ट करने वाली है, गायत्री के अतिरिक्त भूलोक तथा स्वर्ग लोक में पवित्र करने वाला और नहीं है ।

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

गीता मुद्रणालय, गीता-आश्रम स्वर्गाश्रम ।

* भजन *

❀

ना मन ही रहा ना तन ही रहा ।
गुरु (प्रभु) मिलने से झगड़ा खतम हो गया ॥
मेरे गुरु ने पिलाया हरि नाम रस ।
मेरा भीतर बाहर इको रंग हो गया ॥
वो जो वायदा किया था गर्भ के अन्दर ।
मेरे गुरु कृपा से वह पूरा हुआ ॥
जो मात पिता सुत दारा मिले ।
बाजीगर वाला खेल खतम हो गया ॥
मेरे जन्म मरण के फन्दे कटे ।
मैं तो अज अविनाशी अमर हो गया ॥
मेरे गुरू की महिमा मैं कहां तक कहूं ।
मेरा दुई वाला दाग खतम हो गया ॥
ना तन ही रहा ना मन ही रहा ॥
गुरु (प्रभु) मिलने से झगड़ा खतम हो गया ॥

जित जित के वाजियां हारियां ।
असीं सुतियां उमर गुजारियां ।

हाँ असां सुतियां उमर गुजारियां,
जिन्हाँ नाम जपिया फल पा लिया ।।

असां किकरां दा वाग लगा लिया,
भरियां कडियां दे नाल कियारियां ।

सोहने मथे ते दाग लवा लिया,
असां सुतया नाग जगा लिया ।।

खान लगा ही मार के फुकारियां,
जित जित के वाजियां हारियां ।

लिया जनम सी हरि गुन गान नूँ,
आवा गमन दे दुखरे मिटान नूँ ।।

असां वेलियां मौजा ने माणियां,
जित जित के वाजियां हारियां ।

होया विषयाँ दे विच गलतान वे,
ऐथे घड़ी पलक दा मेहमान वे ।।

सब मतलब दे नी पियारिया,
हरि नाम सिमर मन मेरिया ।।

मनां न कर झगड़े झेड़े,
ओथे कोई न आयेगा नेड़े -

हरि नाम सिमर मन मेरिया,
हरि नाम सिमर मन मेरिया ॥
जिन जित के बाजियाँ हारियां,
असां सुतियां उमर गुजारियां ॥

मन में सोच विचार बुल बुला पानी का,
दो दिन में उड़ जाये नशा जवानी का ।
तूने कैसे रचा मेरे राम खिलौना माटी का,
तुझे कोई न सका पहिचान खिलौना माटी का ॥
आंख दी दर्शन करने को कान दिए सुन ज्ञान,
तूने कैसे रचा मेरे राम खिलौना माटी का ।
पैर दिये तीरथ करने को हाथ दिये कर दान,
देह दई सत्संग करने को कर गंगा स्नान ॥
जिह्वा दीन्हीं हरि सिमरन को कर ले हरि का गान,
कहत कबीर सुनो भाई साधो करलो हरि का ध्यान ॥



— : वैराग में भजन : —

सखि मैं जबते निरखे श्याम
मोहिं कछु न सुहावैरी ।

ऐसो सुन्दर रूप उजेरो नहिं कोऊ मैं त्रिभुवन हेरी,
फिर फिर मेरो चित्त उतही को धावैरी ॥

सखि मैं जबते निरखे श्याम...,
हरि बिन सब जग अंधहि दीखै ।

सुख सम्पति सब लागत फीके,
अब मेरे मन धीरज कौन बंधावैरी ॥

सखि मैं जब तें निरखे श्याम...,
तारे [illegible] विहात न रजनी ॥
[illegible] गुण अधिक ही सजनी ॥
ललित लड़ैती जो तू वाहि मिलावैरी ।
सखि मैं जबते निरखे श्याम ॥



शुभ-सम्मति

इस पुस्तक में—

आरम्भसे अंत तक 'हीरे-मोती' ही भरे हैं। हिन्दी तथा पञ्जाबी दोनों भाषाओं के उत्तम से उत्तम भजनों का यह संग्रह श्रीमती लक्ष्मी गोगिया जी ने बड़े परिश्रम से प्रस्तुत किया है। इन भजनों में भक्ति, विनय तथा वेदान्त कूट-कूट कर भरा है। गुरुनानक देव, कबीर, मीरा, तुलसी, सूर, रैदास तथा स्वामी ब्रह्मानन्द आदि महान सन्तों की वाणियां पढ़ते ही आपका रोम-रोम प्रफुल्लित हो जावेगा। प्रभु-वन्दना, कीर्तन भजन, आरती तथा प्रार्थना आदि अनेक प्रकार के पदों से संयुक्त यह अमूल्य पुस्तिका एक बार अवश्य पढ़कर सच्चे सुख और शान्ति का दर्शन करें।

स्वामी केशवानन्द

स० ध० मन्दिर, ईस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली।